संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
अंक : १९१
नवम्बर २००८
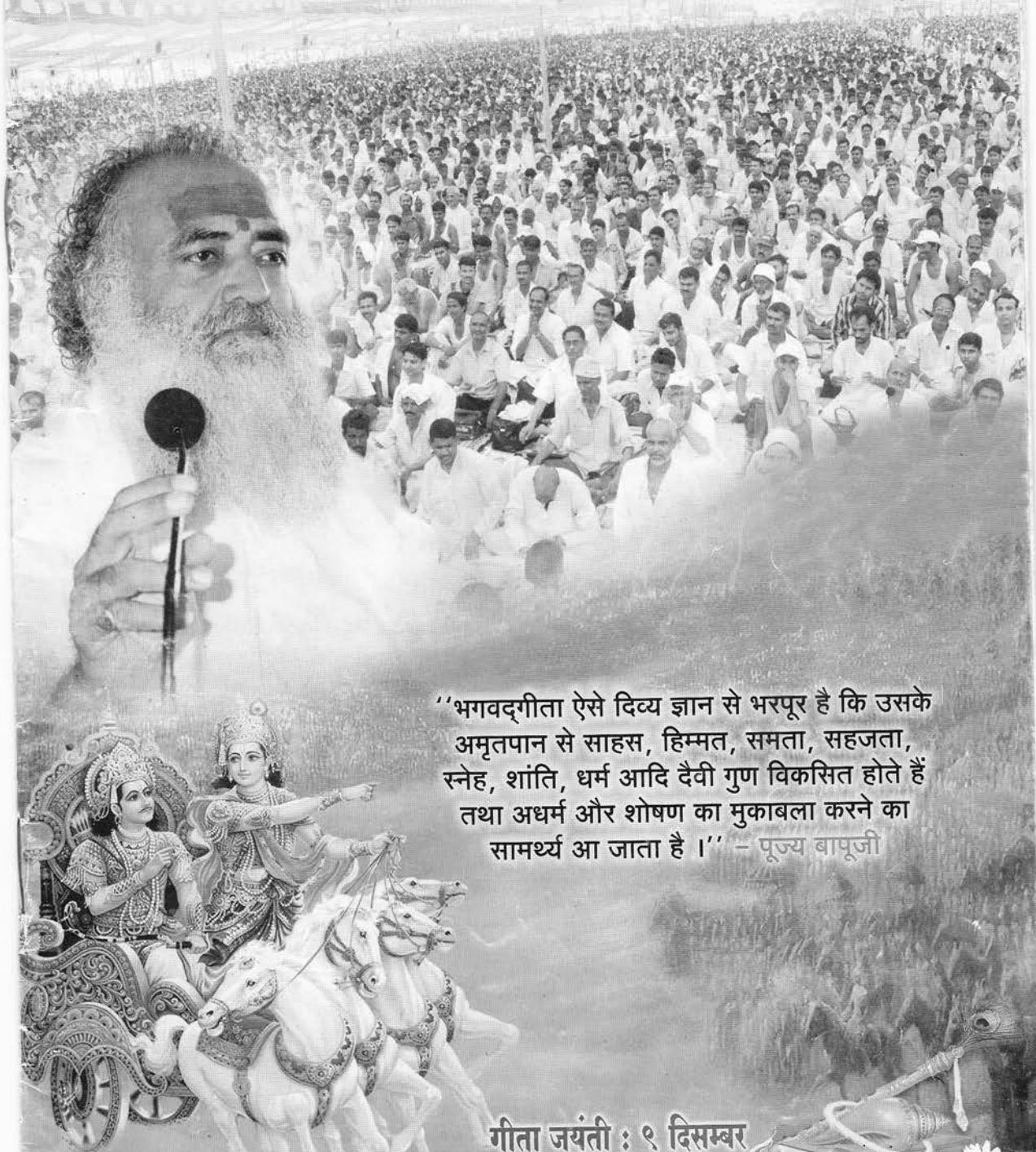
''भगवद्गीता ऐसे दिव्य ज्ञान से भरपूर है कि उसके अमृतपान से साहस, हिम्मत, समता, सहजता, स्नेह, शांति, धर्म आदि दैवी गुण विकसित होते हैं तथा अधर्म और शोषण का मुकाबला करने का सामर्थ्य आ जाता है ।'' - पूज्य बापूजी

गीता जयंती : ९ दिसम्बर

हे अर्जुन ! ज्ञानी तो साक्षात् मेरा स्वरूप ही है। (गीता : ७.१८)
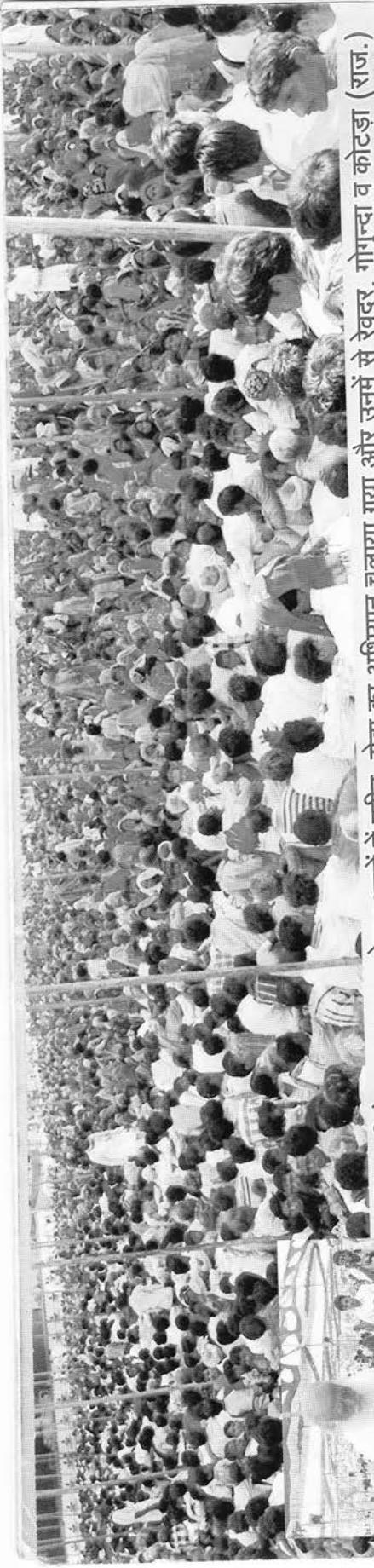
दीपावली के अवसर पर अनेक स्थानों में गरीब-सेवा का अभियान चलाया गया और उनमें से रेवदर, गोगुन्दा व कोटड़ा (राज.) इन स्थानों पर पूज्य बापूजी स्वयं ही पहुँच गये थे। यह सेवा-अभियान पिछले ३०-३५ वर्षों से हर वर्ष चलाया जा रहा है।
बापूजी आये तो दिवाली... दिवाली आये तो बापूजी !
'नर-सेवा ही नारायण-सेवा'
धूप में नंगे सिर घूमने से आँख, कान व यादशक्ति को हानि होती है, इसलिए टोपियाँ बाँटी गयीं।
गरीबों को अनाज, तेल, कपड़े, साबुन, बर्तन, मिठाइयाँ, कम्बल, जूते-चप्पल आदि अनेक सामग्रियों के साथ नकद आर्थिक सहायता भी दी गयी। बच्चों को कपड़े, कापियाँ, बिस्कुट, मिठाइयाँ आदि बाँटी गयीं।

ऋषि प्रसाद
मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलगू व अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १९ अंक : १९१
नवम्बर २००८ मूल्य : रु. ६-००
कार्तिक-मार्गशीर्ष वि.सं.२०६५

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. २२५/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिक : US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US$20	US$40	US$80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अतः अपनी राशि मनीऑर्डर या ड्राफ्ट द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

संपर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, मोटेरा, अहमदाबाद, पो. साबरमती-३८०००५ (गुजरात)।
ऋषि प्रसाद से संबंधित कार्य के लिए फोन नं. : (०७९) ३९८७७७१४, ६६११५७१४.
अन्य जानकारी हेतु : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८, ६६११५५००.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, मोटेरा, अहमदाबाद, पो. साबरमती-३८०००५. गुजरात
मुद्रण स्थल : (१) अरावली प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू-३०, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-११००२०.
(२) विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रीज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद - ३८०००९. गुजरात
(३) शिव ऑफसेट (इं.) प्रा.लि., ७३, पोलो ग्राउंड, इंडस्ट्रियल एरिया, इंदौर (म.प्र.).
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

अनुक्रमणिका

विभिन्न टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

संस्कार	आस्था	श्रद्धा	केयर टीवी	आज तक	आईबीएन 7	टीवी 9
रोज सुबह ७-५० बजे व दोपहर २-०० बजे (सोम से शुक्र)	रोज दोपहर १२-२० बजे	रोज दोपहर १२-४० बजे	रोज सुबह ७-०० बजे	रोज सुबह ५-४० बजे	रोज सुबह ६.१० बजे	रोज सुबह ६.०० बजे

विज्ञान ने भी स्वीकारा शक्तिपात-वर्षा का सामर्थ्य
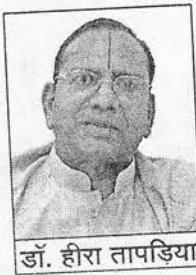
डॉ. हीरा तापड़िया

मैंने १९६२ में आभा (ओरा) विज्ञानकी विद्या सीखी। इसको सीखने में मुझे छः वर्ष का समय लगा। उसके पश्चात् कई वर्ष सतत इस पर अध्ययन किया। मैं संसार में पहला व्यक्ति हूँ जिसे 'आईएसओ ९००१ : २०००' प्रमाण-पत्र मिला हुआ है। मॉस्को की मेडिकल यूनिवर्सिटी में मेरे छः बार लेक्चर हो चुके हैं।

आभा किसी व्यक्ति के शरीर से ३ इंच से लेकर ३०-४० मीटर तक होती है। निर्जीव वस्तुओं की भी आभा होती है। मैंने अब तक लगभग सात लाख से भी ज्यादा लोगों की आभा ली है, जिनमें एक हजार विशिष्ट व्यक्ति शामिल हैं जैसे - बड़े संत, साध्वियाँ, प्रमुख व्यक्ति आदि।

संत श्री आसारामजी की आभा का अध्ययन कर मैंने पाया कि वह इतनी अधिक प्रभावशाली है कि कोई भी उनके पास आयेगा तो वह उनकी आभा से अभिभूत हो जायेगा, उनकी आभा के प्रभाव में रहेगा। (आभामंडल की तस्वीर आवरण पृष्ठ ४ पर)

बापू की आभा में बैंगनी (वायलिट) रंग है, जो यह दर्शाता है कि बापूजी आध्यात्मिकता के शिरोमणि हैं। यह सिद्ध ऋषि-मुनियों में ही पाया जाता है। लालिमा यह दर्शाती है कि बापू शक्तिपात करते हैं, दूसरों की क्षीणता को पूर्णतः हर लेते हैं तथा अपनी शक्ति दे देते हैं। आसमानी रंग अनंत ऊँचाइयों में रहनेवाली बापू की आभा का परिचायक है।

बापू की आभा में खास है शक्ति देने की क्षमता। दूसरों की आभा में देखा कि वे दूसरों की शक्ति ग्रहण कर सकते हैं लेकिन बापूजी की आभा में यह प्रमुखता मैंने पायी कि वे सम्पर्क में आये व्यक्ति की ऋणात्मक ऊर्जा को ध्वस्त कर धनात्मक ऊर्जा प्रदान करते हैं। बापूजी की आभा की एक खासियत यह भी है कि वे दूर से किसीको भी शक्ति दे सकते हैं।

बापू के सत्संग में जब मैं गया था तो वहाँ जाँचने पर मैंने देखा कि बापू की आभा अपने-आप रबड़ की तरह खिंचकर खूब लम्बी हो जाती है और वहाँ उपस्थित समूची भीड़ पर छा जाती है।

आभा के माध्यम से पूर्वजन्म भी जाना जा सकता है। बापू की आभा देखकर मुझे सबसे ज्यादा आश्चर्य हुआ क्योंकि लगातार पिछले कम-से-कम दस जन्मों से बापूजी समाजसेवा का यह पुनीत कार्य करते आ रहे हैं; लोगों पर शक्तिपात करके आध्यात्मिकता में लगाना, व्यसनमुक्त करना, स्वस्थ करना, समाज की बुराइयों को दूर करना, ज्ञानामृत बाँटना, आनंद बरसाना आदि। मुझे पिछले दस जन्मों तक का ही पता चल पाया, उसके पहले का पढ़ने की

क्षमता मशीन में नहीं थी ।

बापूजी का सहस्रार चक्र, आज्ञा चक्र इतनी ऊँचाई तक विकसित हो चुका है जिसके आगे कोई परसेंटेज ही नहीं है। वे पूर्णता की पराकाष्ठा पर पहुँचे हुए हैं। आज तक जितने भी लोगों की आभाएँ मैंने ली हैं, किसीको भी इतना उन्नत नहीं पाया है ।

मैं आशा रखूँगा कि मुझे बापूजी की आभा का अध्ययन करने का फिर से सौभाग्य मिले जैसा कि पहले मिला है। मुझे ऐसी उन्नत आभा देखने का बार-बार लाभ मिले ।

– डॉ. हीरा तापड़िया
आभा (ओरा) विशेषज्ञ ।

पूज्य बापूजी तो असीम शक्तियों के स्वामी हैं । यांत्रिक क्षमता के आधार पर ही उपरोक्त जानकारी मिली है। जैसे टीवी एन्टेना की जितनी क्षमता होती है वह उसी सीमा के अंदर की तरंगों को पकड़कर हमें दिखा सकता है, रेंज के बाहर की तरंगों को नहीं । उसी प्रकार यंत्र की जितनी क्षमता थी वह उतनी ही दूरी तक की आभा को प्रदर्शित कर पाया । ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों की आभा को अथवा उनकी दैवी शक्तियों को पूर्णरूप से आँका नहीं जा सकता ।

ब्रहम गिआनी की मिति[1] कउनु बखानै ॥
ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥

भगवान राम के गुरु वसिष्ठजी भी कहते हैं : 'आत्मवेत्ताओं का पूर्ण वर्णन नहीं किया जा सकता ।' राजा जनक को अष्टावक्र महाराज कहते हैं : **तस्य तुलना केन जायते ?** 'उन आत्मज्ञानी महापुरुष की तुलना किससे की जा सकती है ?' □

१. मति

गुरुजी की तस्वीर ने प्राण बचा लिये

जलगाँव के प्रसिद्ध व्यापारी अग्रवालजी सत्साहित्य सेवाकेन्द्र से बापूजी की कुछ कैसेटें, सत्साहित्य आदि ले गये । उनकी दुकान पर एक आदमी आया । पाँच सौ रुपये का सामान खरीदा और उनका फोन नंबर ले गया। एक घंटे बाद उसने दुकान पर फोन किया : 'सेठजी ! मुझे काफी पैसे देकर आपका खून करने का काम सौंपा गया था । जब आपकी दुकान में लगे परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू के फोटो पर मेरी नजर पड़ी तो मुझे लगा मानों बापूजी साक्षात् बैठे हों और मुझे नेक इन्सान बनने की प्रेरणा दे रहे हों । गुरुजी की तस्वीर ने आपके प्राण बचा लिये ।'

चित्र के द्वारा भी अपनी कृपा बरसानेवाले गुरुदेव को शत्-शत् नमन ।

– बालकृष्ण अग्रवाल, जलगाँव (महा.) ।

तस्वीर का प्रभाव

अहिवारा, जि. दुर्ग (छत्तीसगढ़) के साधक अवधभाई के बड़े भाई का देहांत हो गया । तीन दिन बाद उनकी पत्नी के अंदर एक प्रेत आ गया । वह पूरे परिवारवालों को परेशान करने लगा । उसने घर में पत्थर फेंकना, मारपीट करना, चिल्लाना शुरू कर दिया; रात को डर के कारण कोई सोता नहीं था ।

तांत्रिकों द्वारा झाड़-फूँक कराया लेकिन फायदा नहीं हुआ । एक साधक, जिसके हाथ की कलाई पर 'हरि ॐ' छपा हुआ था, से प्रेत ने कहा : 'मुझे छूना नहीं, जलन होती है ।' फिर तुरंत बापूजी की तस्वीर लायी गयी । तब उसने आँखें बंद करके कहा : 'मुझे पीड़ा हो रही है ।' और प्रेतात्मा रो पड़ी ।

अवधभाई तस्वीर और करीब ले गये । पूछा : 'क्या होता है ? कौन हैं ये ?' प्रेत ने कहा : 'ये

तो महान संत हैं। इनका तेज अद्भुत है, मुझसे सहन नहीं होता।' फिर तो पूरे कमरे में पूज्य बापूजी की तस्वीरें लगा दी गयीं। चार घंटे तक वह महिला बेहोश रही। जब होश में आयी तो प्रेतात्मा जा चुकी थी। यह देखकर सभी पड़ोसियों ने भी पूज्य बापूजी की तस्वीर अपने-अपने घरों में लगा दी।

– सूर्यभान साहू

अहिवारा, जि. दुर्ग (छ.ग.)।

...तो १ घंटे में ही प्राण-पखेरू उड़ जाते !

मेरे चचेरे भाई के पैर में कोब्रा नाग ने डंख मार दिया था जिसके फलस्वरूप केवल आधे घंटे के भीतर ही उसके पूरे शरीर में जहर फैल गया और वह बेहोश हो गया। सरकारी अस्पताल तक पहुँचते ही वह लाश के समान हो गया। वहाँ से उसे गोधरा ले गये व बाद में बड़ौदा ले जाना पड़ा। ट्रेन में सभी निराश होकर बैठे थे। मेरी नजर गाड़ी में लगे हुए पूज्य बापूजी के फोटो पर पड़ी। मैंने मन-ही-मन प्रार्थना की : ''हे गुरुदेव ! अब केवल आप ही मेरे भाई को बचा सकते हैं। यदि मेरा यह भाई ठीक हो जायेगा तो मैं स्वयं दीक्षा लूँगा एवं भाई को भी आपका ध्यानयोग शिविर भरवाने लाऊँगा।''

प्रार्थना के पूरे होते ही पूज्यश्री के ललाट में से एक दिव्य प्रकाश निकला और मेरे भाई के शरीर में प्रवेश कर गया। उसी समय उसका निस्तेज, निश्चल शरीर चेतन हो उठा। बाद में यह सब जानकर डॉक्टर भी आश्चर्यचकित होकर कह उठे : ''असंभव ! मुख्य नस में दंश लगा है, वह भी कोब्रा जाति के नाग का। एक घंटे में ही प्राण-पखेरू उड़ जायें ऐसी हालत थी। किसी दैवी शक्ति ने ही इसको बचा लिया है।''

परम पूज्य बापूजी ने ही मेरे भाई को नवजीवन प्रदान किया है। पूज्य बापूजी केवल सद्गुरु ही नहीं, वरन् अवतारी महापुरुष हैं। उनके श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम !

– शंकरभाई के. पटेल

जांबुघोड़ा, जि. पंचमहाल (गुज.)।

...और डकैत भाग गये

१४ जुलाई १९९९ को जब मैं घर पर नहीं था तो मेरे घर में छः डकैत घुस आये। दो डकैत बाहर मारुति कार चालू रखकर खड़े थे। वे अलमारी की चाबी माँगने लगे। मेरी पत्नी पूज्य बापूजी के फोटो के सामने प्रार्थना करने लगी : 'अब आप ही रक्षा करो...' इतना कहा तो आश्चर्य ! महाआश्चर्य !! वे सब डकैत घबड़ाकर भागने लगे। उनको देखकर ऐसा लग रहा था मानों उन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। बापूजी के आशीर्वाद से सब कुशल हैं।

– मनोहरलाल तलरेजा, झूलेलाल नगर, शिवाजी नगर, वाराणसी (उ.प्र.)। □

...अगर तू निंदा महापुरुषों की करता है

कंकड़ बोकर जमीन में, प्रतीक्षा तू फल की करता है। जमीन में बोया कंकड़ और फल की आशा करता है। पर याद रखना भयंकर होगा परिणाम अगर निंदा तू महापुरुषों की करता है।

असंख्य शून्य अधूरे हैं, केवल एक अंक बिना और सब कुछ निरर्थक है, केवल संत के सत्संग और भगवान के नाम के बिना।

अनंत सर्पों के विष से कभी शिवजी नहीं भयभीत हुए। कितने ही साँप आकर लिपट जायें शिवजी से, उन्हें कभी डर नहीं लगता। उसी प्रकार किसी भी अफवाह से संत-समाज और भक्त-समुदाय कभी भयभीत नहीं होता, वह तो अपनी महिमा में मस्त रहता है, सज्जन-समाज सुप्रचार के पुरुषार्थ में लग जाता है।

जीवन सौरभ

उन मधुर दिनों की याद...

(ब्र. स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज महानिर्वाण तिथि : ७ नवम्बर)

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

ज्ञानी की सेवा करने से ज्ञानी की कृपा बरसती है और अंतःकरण में ज्ञानी के दिव्य गुण जल्दी प्रकट होने लगते हैं। मैंने यदि मेरे गुरुदेव (स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज) की सेवा न की होती तो क्या उन्हें कोई कमी पड़ती ? क्या उनका कोई काम रुक जाता ? नहीं, मैंने सेवा की तो मुझे ही लाभ हुआ।

मैं जब गुरुजी के पास गया था तब वहाँ मुझे ४ फीट चौड़ी, ५ फीट ऊँची और ६ फीट लम्बी कुटिया रहने के लिए मिली थी। उसकी छत नीची और दरवाजा छोटा होने की वजह से झुककर ही अंदर जाया जा सकता था। सोते समय पैर भी ठीक-से लम्बे नहीं कर सकता था। मेरे पास जो थोड़े-बहुत पैसे थे उनसे मूँग और नमक मँगवाता। दिन में एक बार मूँग उबालकर उसमें नमक डालकर पी जाता। शुरुआत से ही मुझे ऐसी तितिक्षाओं से गुजरना पड़ा था। मूँग बनाने के समय को छोड़कर बाकी के समय में मैं पूज्य गुरुदेव के नाम से आयी हुई भक्तों की चिट्ठियाँ पढ़कर गुरुदेव को सुनाता और गुरुदेव की आज्ञा के अनुसार उनका जवाब देता। बगीचे में पानी देता। अतिथियों के लिए जिन बर्तनों में भोजन बनता उनको साफ करता। बाजार में से सब्जी खरीदकर लाता। इसके अलावा कई छोटे-बड़े काम करता। बाकी के समय में ध्यान, ईश्वर-चिंतन करता और सद्गुरुदेव जब सत्संग करते तब सत्संग सुनता। मैं इस बात की हमेशा पूरी सावधानी रखता था कि कोई भी कार्य ऐसा न हो जाय कि गुरुदेव मुझ पर नाराज हो जायें। मैं गुरुदेव के सामने बहुत ही कम, मर्यादित एवं जितना आवश्यक होता उतना ही बोलता।
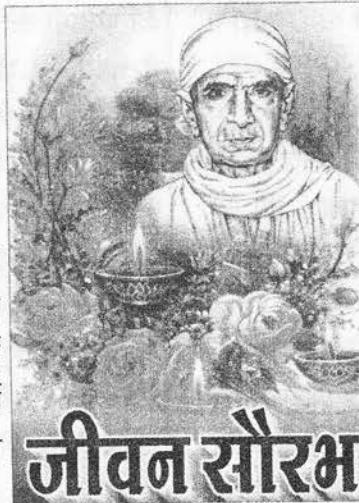
एक बार गुरुजी जब मौज में थे तब मुझे विनोद करने का मौका मिला। मैंने गुरुदेव से पूछा : ''गुरुदेव ! **ब्रह्म गिआनी कउ खोजहि महेसुर। नानक ब्रह्म गिआनी आपि परमेसुर॥** ऐसा गुरुवाणी में आता है।''

गुरुदेव ने कहा : ''हाँ, आता है।''

मैंने कहा : ''उन महेश्वर को ब्रह्मज्ञानी मिले कि नहीं ? यदि नहीं मिले हों तो मैं अभी जाऊँ और उन्हें बता दूँ।''

गुरुजी ने विनोदी संकेत किया : 'चुप कर।'

अब भी जब वे मधुर दिन याद आते हैं तब मेरा हृदय आह्लादित हो उठता है ! गुरुदेव के चरणों में बैठकर जो आनंद आता था, आहाहा... !!! गुरुदेव के चरणों में बैठकर सत्संग सुनने का जब सौभाग्य प्राप्त हुआ था उन दिनों को याद करता हूँ तो लगता है कि आहा ! वे दिन अब भी मिले होते तो कितना अच्छा होता ! गुरु बनने की अपेक्षा गुरुदेव के चरणों में बैठना ज्यादा सुखद है... कल्याणकारी है... आनंददायक है...

भगवान की चोरी या भगवान की प्राप्ति ?

तुम अकेले पचास वर्षों तक साधना करते रहो, मंदिर-मसजिद में जाते रहो, पूजा-पाठ करते रहो, आरती करते रहो परंतु आखिरी लक्ष्य की सिद्धि हासिल करना बाकी रह जाता है। भक्तकवि नरसिंह मेहता ने गाया है :

ज्यां लगी आत्मतत्त्व चीन्यो नहीं,
त्यां लगी साधना सर्व झूठी।

अर्थात् जब तक आत्मतत्त्व को नहीं पहचाना तब तक सब साधनाएँ अधूरी हैं।

किसी भी जीवन्मुक्त संत के सान्निध्य में रहकर साधना करने से साधना में तीव्र प्रगति होती है और उसके फलस्वरूप साधक की जो अवस्था आती है उसका वर्णन करते हुए कबीरजी कहते हैं :

मन मेरो पंछी भयो, उडन लाग्यो आकाश।
स्वर्गलोक खाली पड्यो, साहिब संतन के पास॥

मैं पहली बार नया-नया जब गुरुजी के पास गया था, तब गुरुजी का व्यवहार आश्चर्यजनक लगता था। बाद में पता चला कि यह तो उनकी करुणा-कृपा थी कि वे हमारे सामने बिल्कुल सहज अवस्था में रहते थे, जिससे हम उनके ऊँचे अनुभव को समझ सकें और हम भी अनुभव कर सकें। कभी-कभी तो गुरुदेव का इतना कठोर व्यवहार होता था कि यदि कोई अभागा होता तो उसी समय बिस्तर बाँधकर भाग जाता। संत प्रीतमदासजी ने इसीलिए कहा है : **हरिनो मारग छे शूरानो, नहीं कायरनुं काम जो ने।** अर्थात् ईश्वरीय मार्ग शूरवीरों का मार्ग है, उसमें कायरों का काम नहीं। साधनाकाल एक भयंकर समरांगण है। कोई पुण्याई रही होगी और गुरु की कृपा हुई तो मैं टिक सका। ब्रह्मज्ञानी गुरु के द्वार पर टिके रहना यह कोई मजाक की बात नहीं है। उनकी तेज आवाज, उग्र रूप और कठोर व्यवहार देखकर कोई ढीला-ढाला साधक तो एक घंटा भी न रह सके। इसीलिए तो मेरे गुरुदेव के पास ज्यादा साधक न टिक सके।

अरे ! गुरुदेव ऐसी-ऐसी डाँट लगाते, ऐसा-ऐसा व्यवहार करते कि तुम्हें क्या-क्या बताऊँ ? उस समय मेरा नित्यक्रम था कि शिवजी की पूजा करके, उनको पानी चढ़ाकर ही फिर मैं पानी पीता था। एक दिन शिवजी और शिवजी के पूजन की सामग्री की चोरी करवा दी गयी। जिन लोगों ने चोरी की थी उन्हें गुरुजी सहयोग दे रहे थे और मेरा मजाक उड़ा रहे थे। हालाँकि शिवपूजा करना और जल चढ़ाना कोई खराब काम नहीं है। मैं नहाकर फिर शिवजी को नहलाता। अपने हाथ से भोजन बनाता और पहले शिवजी को भोग लगाकर फिर मैं भोजन करता। अब वे शिवजी गुम हो गये। एक गुरुभाई ने गुरुजी से बात की : ''साँईं ! साँईं !! आसुमल उदास है। कहता है कि मेरे भगवान कहीं चले गये... किसीने चोरी कर ली। साँईं ! किसीने उसके भगवान की चोरी की।''

पूज्य गुरुदेव ने हँसते हुए कहा : ''अरे ! भगवान की चोरी हो गयी। वाह भाई वाह !''

ऐसा करके गुरुदेव ने मेरा खूब मजाक उड़ाया। एक तो भगवान की चोरी हो गयी ऊपर से सारा दिन मैंने कुछ खाया नहीं था। दूसरी तरफ पूज्य गुरुदेव भी मजाक उड़ा रहे थे। कैसा लगता होगा ?

'ये तो कोई महाराज हैं ?'- ऐसा सोचकर मैंने बेवकूफी की होती तो...?

परंतु ऐसा नहीं हुआ... यह भी गुरुदेव की कृपा थी। बाद में पता चला कि बाहर के भगवान में उलझे रहने के लिए ब्रह्मज्ञानी गुरु का द्वार नहीं है। बाहर के भगवान से पार, वास्तविक भगवद्स्वरूप में स्थिति करवाने के लिए गुरुदेव ने ही यह सब खेल करवाया था। कैसी कल्याणकारी और विलक्षण होती है उनकी अनुकंपा ! ब्रह्मज्ञानी गुरुदेव के एक-एक वाक्य का, एक-एक चेष्टा का रहस्य कितना सूक्ष्म होता है उसका पता सामान्यजन को कैसे लग सकता है ?

ढूँढ़े देश-विदेश में, घर हीरा की खान।
सद्गुरु बिन कौ' खान की, करवावे पहिचान॥

(शेष पृष्ठ ८ पर)

जिज्ञासु बनो

– पूज्य बापूजी

एक लड़के ने शिक्षक से पूछा : ''मैं महान कैसे बनूँ ?''

शिक्षक बोले : ''महान बनने की जिज्ञासा है ?''

''है।''

''जो बताऊँ वह करेगा ?''

''करूँगा।''

''लेकिन कैसे करेगा ?''

''मैं मार्ग खोज लूँगा।''

शिक्षक ने कहा : ''ठीक है, फिर तू महान बन सकता है। जिसके अंदर 'खोज' है वह छोटी-छोटी बात में से भी बड़ा रहस्य खोज लेगा और जिसके जीवन में 'खोज' नहीं है वह रहस्य दिखते हुए भी अनदेखा कर देगा।''

जिज्ञासु की दृष्टि पैनी होती है, खोजी होती है। हर घटना को वह बारीकी से देखता है, सोचता है। जिज्ञासा की तीव्रता आदमी में कर्मठता लाती है, तत्परता लाती है । जिज्ञासारहित मनुष्य आलसी हो जाता है, प्रमादी हो जाता है, तुच्छ रह जाता है।

जो लोग जगत की कामना, जगत की जिज्ञासा करते हैं उनको जागतिक वस्तु ही मिलती है। जगत की वस्तुओं में खोज करके आइन्स्टाईन जैसे व्यक्ति विश्वविख्यात खोजी बन गये। न्यूटन जैसे खोजी ने जिज्ञासा के बल से ही तो इतना नाम कमाया ! ढक्कन उछलता-कूदता है तो यह साधारण रसोइये के लिए तो कुछ भी नहीं लेकिन जिज्ञासुओं ने वाष्प के नियम को खोजकर 'बॉयलर पद्धति' खोज ली और रेलगाड़ी चलायी। किसान देखता है फल गिर रहा है। उसके लिए कुछ भी नहीं लेकिन जिज्ञासुओं ने गुरुत्वाकर्षण का नियम खोजकर न जाने कितनी सारी उपलब्धियाँ पा लीं ! ऐहिक जगत की आपकी जिज्ञासा ऐहिक चमत्कार पैदा कर देती है, यौगिक जगत की जिज्ञासा यौगिक जगत में चमत्कार पैदा कर देती है और भक्ति के जगत की जिज्ञासा भक्ति के जगत में आपको उन्नत कर देती है।

सारी ऊँची-ऊँची खोजें, चाहे ऐहिक जगत की हों, धार्मिक जगत की हों कि तात्त्विक जगत की हों, ये खोजें जिज्ञासा से ही हुई हैं। इसलिए अपने जीवन को उन्नत करना चाहो तो जिज्ञासु बनो। अगर जिज्ञासा नहीं है तो साधना में तत्पर बन जाओ, ध्यान करो और जिज्ञासा पैदा करो।

कक्षा में पचास विद्यार्थी पढ़ते हों, पचीस पढ़ते हों लेकिन पाँच विद्यार्थी एकदम ऊँचे निकलते हैं। शिक्षक तो वही-के-वही, पाठ्यपुस्तकें भी वही-की-वही लेकिन जिन विद्यार्थियों ने ध्यान से सुना है, जिज्ञासा की है, प्रश्न किये हैं और उत्तर खोजे हैं वे विद्यार्थी अपना नाम, माँ-बाप का नाम तथा विद्यालय का नाम रोशन करते हैं और जो विद्यार्थी पढ़ते समय 'हें... हें... हें...' करते हैं अथवा तो भटकते हैं, आवारागर्दी करते हैं और दोपहर की छुट्टी के बाद देर-देर से आते हैं, वे विद्यार्थी थोड़े ही अंक लेकर अपने जीवन की गाड़ी घसीटते-घसीटते मर-मिट जाते हैं किसी कोने में, पता ही नहीं चलता। तो जिज्ञासु बनो। अध्यापक पढ़ायें तो तत्परता से पढ़ो। समझ में न आये तो जल्दी-से सवाल न करो, स्वयं उसका

उत्तर खोजो। उत्तर न आये तो फिर अपने साथी से या अध्यापक से पूछो।

'ऐसे क्यों, ऐसे क्यों, ऐसा क्यों...' ऐसा करके तुमने जो बात सुनी है, उसे जानने के लिए प्रयत्न करो।

बोले : 'बापू ! बुद्धि ही नहीं है।'

बुद्धि नहीं है तो चिंता न करो। जो भी कमी है उस कमी की पूर्ति की संभावनाएँ आपमें छुपी हैं। हाथों की हथेलियों को आपस में रगड़ते हुए चिंतन करो : 'मेरे हाथों में जिज्ञासा जगाने की शक्ति है, यादशक्ति जगाने की शक्ति है, आरोग्यशक्ति है। हरि ॐ... हरि ॐ... हरि ॐ... हरि ॐ...। मेरी यादशक्ति और जिज्ञासा जागृत हो। हरि ॐ... हरि ॐ... हरि ॐ...। मेरी यादशक्ति व जिज्ञासा जग रही है। हरि ॐ... हरि ॐ... हरि ॐ...।' इस प्रकार भगवान का नाम लेकर चिंतन करके एक-एक कमी की पूर्ति के लिए जहाँ-जहाँ कमी है उस-उस स्थान पर आप दोनों हथेलियों से स्पर्श करो, बड़ा फायदा होगा।

आप बीमार हुए तो उसमें भी जिज्ञासा चाहिए। रात को नींद नहीं आयी तो क्यों नहीं आयी ? उसमें भी जिज्ञासा चाहिए। देर से उठते हो तो क्यों देर से उठते हो ? उसमें भी जिज्ञासा चाहिए। याद नहीं रहता तो क्यों याद नहीं रहता है ? आप कमजोर हो तो क्यों कमजोर हो ? भाई ! जिज्ञासारूपी देवता तो आगे-पीछे पल-पल में चाहिए। जिसको जिज्ञासा नहीं है उसको तो ब्रह्माजी भी उपदेश दें तो क्या हो जायेगा ?

आज तो जहाँ देखो, चारों तरफ आपको शोषित करने के लिए लोग मुँह फाड़े हुए, हाथ पसारे हुए हैं। आप बाजार से गुजरते हो तो हर सेल्समैन और दुकानदार चाहता है कि आप उससे चीज लें। वे छोटी चीज, सस्ती चीज भी भारी दाम में आपको पकड़ाने की कोशिश करेंगे। मौका मिले तो तौल में भी इधर-उधर करने की कोशिश करेंगे। अगर ड्राइविंग करते हैं तब भी आप सावधानी से नहीं चले तो आपको पीछे करके लोग आगे निकल जायेंगे। चौराहे पर सिग्नल लाल बत्ती दिखा रहा है लेकिन आप दूर खड़े रहे तो आपसे पीछेवाला आगे आकर खड़ा हो जायेगा और पहले निकल जायेगा। सब आपको पीछे करके आगे निकलने की होड़ में हैं। अगर आप जिज्ञासा नहीं करोगे, तीव्रता नहीं करोगे, तत्परता नहीं करोगे तो बुद्धि में भी पीछे रह जाओगे, मुसाफिरी में भी पीछे रह जाओगे, सेवा में भी पीछे रह जाओगे, मुक्ति में भी पीछे रह जाओगे। आपको तो जिज्ञासा होनी चाहिए। पीछे क्यों रहो ? पछाड़ क्यों खाओ ? अपनी नादानी के कारण आदमी पछाड़ खाते हैं, अपनी जिज्ञासा के अभाव में पछाड़ खाते हैं, जरा-जरा-सी बात में आवेश में आने से पछाड़ खाते हैं। न आवेश में आना है, न कायर होना है, न मूर्ख होना है, न जिज्ञासारहित मिट्टी का ढेला होना है। बुद्धि भी चाहिए, तत्परता भी चाहिए, जिज्ञासा भी चाहिए और निर्णय करते वक्त परमात्मा में थोड़ा गोता मारने की कला भी आ जाय तो मंगल हो जाय, कल्याण हो जाय... ❑

(पृष्ठ ६ से 'उन मधुर दिनों की याद...' का शेष)

जो चीज माँ नहीं दे सकती, जो चीज पिता नहीं दे सकते, पति नहीं दे सकता, पत्नी नहीं दे सकती, मित्र नहीं दे सकता, सांख्यदर्शन, योगदर्शन, कर्मकाण्ड और उपासना नहीं दे सकते वही चीज वेदांतनिष्ठ महापुरुष हँसते-हँसते दे देते हैं। **वे स्वयं तो देहाध्यास से परे हैं और दूसरों को भी उत्साह देकर, जरूरत पड़े तो धक्का मारकर भी ज्ञान के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा देते हैं।** ❑

अच्छे संग तरे, बुरे संग मरे

महापुरुषों का जीवन-चरित्र पढ़ने से पता चलता है कि जब-जब परम हितकारी संत अवतरित हुए हैं, तब-तब निंदकों ने समाज में उन्हें नीचा दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। ऐसे निंदक अपना कुल-खानदान तो नष्ट करते ही हैं साथ में सात-सात पीढ़ियों को पतन की खाई में भेज देते हैं। ऐसे निंदकों का जो संग करते हैं, जो उन्हें सहयोग देते हैं उनका भी वही हाल होता है। अतः संग करने में सदा सावधान रहना चाहिए।

हीयतेहि मतिस्तात ! हीनैः सह समागमात्।
समैश्च समतामतिं विशिष्टैश्च विशिष्टताम् ॥

'हे प्यारे ! अपने से हीन पुरुषों की संगति करने से बुद्धि हीन हो जाती है, अपने जैसों की संगति करने से समान रहती है तथा अपने से बड़ों की संगति करने से बड़ी उत्तम हो जाती है।'

जिन जैसी संगति करी बैसी ही फल लीन।
कदली, सीप, भुजंग मुख बूंद एक गुण तीन ॥

'जो जैसों की संगति करता है वह वैसा ही फल लेता है। स्वाति नक्षत्र की बूँद एक ही होती है परंतु वही कदली की संगति से कपूर, सर्प के मुख में जाने से जहर और सीपी में जाने से मोती बन जाती है।'

बहुत समय पहले लाहौर में एक छज्जू भक्त हो गये। एक दिन वे अपने चबूतरे पर बैठे थे, गाँव के कुछ और लोग भी उनके साथ थे। गली में एक फल बेचनेवाले ने आवाज दी : 'अच्छे संतरे, भाई ! अच्छे संतरे।'

छज्जू भक्त ने साथियों से कहा : ''सुनते हो भाई ! यह आदमी क्या कह रहा है ?''

साथियों ने कहा : ''संतरे बेचता है भक्तजी !''

भक्तजी बोले : ''भाई ! तुम समझे नहीं। ध्यान से सुनो, वह कह रहा है, 'अच्छे संग तरे' अर्थात् जो अच्छे लोगों का संग करता है वह तर जाता है और 'बुरे संग मरे' - जो बुरे लोगों का संग करता है वह बुरी मौत मरता है, नाश को प्राप्त होता है।''

फिर भक्तजी ने एक दृष्टांत सुनाया। एक काक और हंस की परस्पर मित्रता हो गयी। एक दिन हंस को काक अपने घर ले आया और एक सूखे हुए बबूल के वृक्ष पर बैठा दिया, जिसके आस-पास पड़ी हुई विष्ठा, मांस और अस्थियों से दुर्गन्ध आ रही थी।

हंस ने कहा : ''भाई ! मैं तो ऐसी गंदी जगह पर एक पल भी नहीं ठहर सकता। हाँ, यदि कोई तुम्हारा पवित्र स्थान हो तो वहाँ ले चलो।''

तब काक उसको राजा के गुप्त बगीचे में ले गया और जिस वृक्ष के नीचे राजा आराम कर रहा था उसी पर लाकर बैठा दिया। पास ही आप भी बैठ गया। हंस ने जब नीचे देखा तो उसे मालूम हुआ कि राजासाहब बैठे हैं और उनके सिर पर धूप आ रही है।

हंस का तो साधु-स्वभाव होता है। उसे दया आयी, उसने अपने दोनों पंख फैला दिये, जिससे राजा के सिर पर छाया हो गयी और वह सुख का अनुभव करने लगा परंतु काक का स्वभाव तो दुष्टों जैसा होता है। उसने अपने स्वभाव के अनुसार ऊपर से राजा के सिर पर विष्ठा कर दी। राजा ने ऊपर निशाना साधा

तो हंस फड़फड़ाता हुआ नीचे आ गिरा और काक झट्-से उड़ गया । हंस प्राण देता हुआ बोला :

नाऽहं काको हतो राजन् हंसोऽहं निर्मले जले ।
नीचसंगप्रभावेन जातं जन्म निरर्थकम् ॥

'हे राजन् ! जो मारा गया (जिसे निशाना बनाया गया था) वह विष्ठा करनेवाला काक मैं नहीं हूँ । मैं तो निर्मल जल में रहनेवाला हंस हूँ परंतु नीच (काक) की संगति के प्रभाव से मेरा जीवन बरबाद हो गया ।'

सज्जन हंस के समान होते हैं जबकि निंदक काक की भाँति, जिनका संग करने से सज्जनों की भी अधोगति हो जाती है ।

'श्री रामचरितमानस' के 'सुंदर कांड' (४५.४) में भगवान श्रीरामचंद्रजी विभीषण से कहते हैं :

बरु भल बास नरक कर ताता ।
दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ॥

'हे तात ! नरक में रहना अच्छा है मगर विधाता दुष्ट का संग कभी न दे (क्योंकि दुष्ट का संग बारम्बार जन्म-मरण और नरकादि को देनेवाला होता है) ।'

होवत हैं गुण उत्तम नास
कुसंगत ते सनकादि डरहीं ।

संपूर्ण ग्रंथ और महात्मा पुरुष इस जीव को कुसंग से बचने की बहुत प्रेरणा करते हैं ।

कुसंग से मनुष्य का अधःपतन बहुत शीघ्र हो जाता है । जैसे वृक्ष पर चढ़ने के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है मगर गिरने में कुछ भी परिश्रम नहीं करना पड़ता है, इसी प्रकार आत्मिक बल प्राप्त करने और साधन-सम्पन्न होने के लिए बहुत पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है परंतु कुसंगति से, निंदकों के संग से बहुत काल का किया हुआ परिश्रम तथा साधन नष्ट हो जाता है । ❑

हत्या का पाप किसके सिर पर ?

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

एक बार किसी ब्राह्मण के यहाँ कुछ साधु गये । वह ब्राह्मण भक्त था । उसने नौकर को कहा : ''जाओ, फलाने गाँव से दूध का घड़ा भरकर ले आओ ।''

नौकर गया और दूध का घड़ा लेकर आ रहा था । वह रात का जगा था, जरा थक गया था तो आराम करने के लिए पेड़ के नीचे सो गया । एक चील कहीं से साँप उठाकर लायी थी, पेड़ पर बैठकर जब उसने साँप को खाने के लिए चोंच मारी तो साँप के मुँह में जो जहर था वह घड़े में गिर गया । अब वह बेचारा नौकर तो सोया था, उसको पता नहीं । नींद खुली तो दूध का घड़ा लेकर चला गया । ब्राह्मण ने खीर बनायी । वह खीर खाकर कुछ साधुओं को तो उलटी हुई और जिनका पाचन कमजोर था, यकृत कमजोर था वे चार साधु मर गये ।

अब यमराज के पास जब वह चार हत्याओं का मामला पहुँचा तो यमराज ने भगवान से पूछा कि ''इसमें नौकर का भी कसूर नहीं है, ब्राह्मण का भी कसूर नहीं है तो ये चार हत्याएँ मैं किसके नाम लिखूँ ? इसमें चील भी जिम्मेदार नहीं, चील तो अपना पेट भरने का काम कर रही थी । साँप भी जिम्मेदार नहीं क्योंकि साँप ने तो जहर डाला नहीं था । वह नौकर भी जिम्मेदार नहीं, ब्राह्मण

भी जिम्मेदार नहीं, रसोइया भी जिम्मेदार नहीं लेकिन चार लोगों की हत्या हो गयी, यह पाप किसके नाम लिखना पड़ेगा ?''

भगवान ने कहा : ''जो व्यर्थ ही किसीकी निंदा करते हैं उनके नाम लिख डालो ।''

हम आपको हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं कि किसीकी निंदा सुनो नहीं, कोई करे तो बोलो : 'भाई ! मेरे पास यह गंदगी रखने के लिए जगह नहीं है । ऐसा माल हम नहीं लेते ।'

जिसकी निंदा करते हैं वह तो अपने क्रिया-कलापों में आनंदित होगा या ऊँचा आत्मा है तो सत्संग में, साधना में, ईश्वरभाव में होगा । तो हम उसकी निंदा करके-सुनके अपना सत्यानाश क्यों करें ? क्यों अपना मन खराब करें ?

तू तो राम भजन कर, जग मरवा दे, लड़वा दे ।
नरक पड़े उसे पड़वा दे, तू तो राम भजन कर... ।

'यह ऐसा है, वह ऐसा है... इसने ऐसा कर दिया, उसने ऐसा कर दिया...'- इस प्रकार कोई किसीकी निंदा करता तो भगवान रामजी धीरे-से बात को बदल देते थे, नहीं तो फिर वहाँ से उठ जाते । आप भी ऐसा करो तो आपके हृदय में आत्माराम का ज्ञान बढ़ेगा । क्यों निंदा सुनना, क्यों निंदा करना ?

पर निंदा सम अघ न गरीसा ।

परायी निंदा के समान बड़ा कोई पाप नहीं है ।

एक लड़की की शादी हो गयी और वह ससुराल गयी । दो-तीन दिन हुए तो जो मेहमान आये थे, सब चले गये लेकिन जो दो ननदें थीं, वे दूर से आयी थीं । वे १०-१५ दिन रहीं । एक दिन एक ननद गपशप लगाते हुए बोली : ''भाभी ! तुम तो आयी हो नयी-नयी लेकिन मेरे भाईसाहब का स्वभाव ऐसा है, वह तो बड़ा तेज है ।'' तो दूसरी ने कहा : ''मिजाज का ऐसा है, वैसा है...'' सासु बोली : ''तेरा तो पति है लेकिन मैंने तो कोख से जाया है । वह तो बचपन से ही शैतान है, अब तुझे खबर पड़ेगी ।''

उन तीनों ने मिलकर अपने भाई व बेटे की निंदा की लेकिन बहुरानी सुनती रही । आखिर ननद बोली : ''भाभी ! तुम तो कुछ बोलती नहीं हो ?''

''क्या बोलूँ ? आप तो २-५ दिन की मेहमान हो, फिर चली जाओगी । सासुजी ! बुरा मत मानना, आप भी बूढ़ी हो गयी हो, आप भी कुछ दिन की मेहमान हो । मुझे तो उनके साथ जिंदगी भर रहना है । मैं क्यों उनकी निंदा करूँ ? मेरे तो पतिदेव हैं । मेरे पति के हृदय में मेरा परमात्मा है । मैं उनकी निंदा सुनकर क्यों आपकी 'हाँ' में 'हाँ' भरूँगी ?''

ननदें बोलीं : ''तब तो तुम्हारा घर अच्छा चलेगा, हमारा तो अपने पतियों के साथ खूब लड़ाई-झगड़ा हो रहा है ।''

बहू : ''जब एक-दूसरे के दोषों का चिंतन करोगी तो घर में झगड़ा रहेगा और अपना दिल भक्तिभाव से भरोगी तो झगड़ा मिटेगा और घर में स्वर्ग होगा । इसलिए तुम बापू की कथा में जाया करो, किसी भी संत-महात्मा की कथा में जाया करो ।''

कथा कीरतन रात दिन, जा के उद्यम येह ।
कहैं कबिर ता साधु के, चरन कमल की खेह ॥

जिनका कथा, कीर्तन, जप-ध्यान, मौन यह उद्यम है, ऐसे संतों के चरण की जूती भी बन जायेंगे तो भी हमारा उद्धार हो जायेगा, कल्याण हो जायेगा, मंगल हो जायेगा । ❐

सेवादारों व सदस्यों के लिए विशेष सूचना

'ऋषि प्रसाद' पत्रिका के सभी सेवादारों तथा सदस्यों को सूचित किया जाता है कि 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका की सदस्यता के नवीनीकरण के समय पुराना सदस्यता क्रमांक/रसीद-क्रमांक एवं सदस्यता 'पुरानी' है - ऐसा लिखना अनिवार्य है। जिसकी रसीद में ये नहीं लिखे होंगे, उस सदस्य को नया सदस्य माना जायेगा।
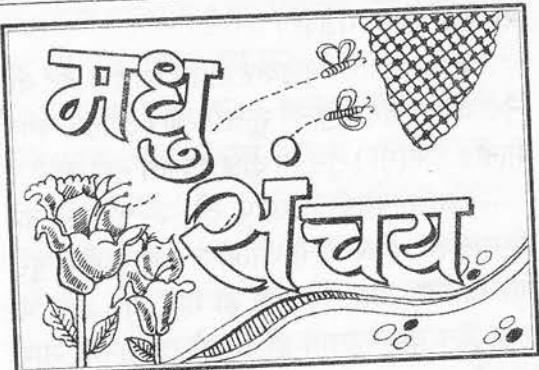
कैसे हैं आपके कृष्ण !

(पूज्यश्री के सत्संग-प्रवचन से)

महाभारत का युद्ध पूरा हुआ । मानवमात्र को आनंद देना, कर्षित-आकर्षित करना जिनका स्वभाव है वे श्रीकृष्ण अंधे धृतराष्ट्र और आँखों पर पट्टी बँधी गांधारी के पास उन्हें सांत्वना देने गये ।

ज्यों युधिष्ठिरसहित श्रीकृष्ण गाँधारी के करीब पहुँचे, त्यों कोपायमान गांधारी की नजर पट्टियों के नीचे से युधिष्ठिर के पैरों पर पड़ी और उनके पैरों के नाखून काले हो गये । इतनी क्रोधाग्नि में तप रही थी वह, इतना उसका तप था !

तत्पश्चात् पांडव, श्रीकृष्ण, धृतराष्ट्र एवं कुरुकुल की स्त्रियाँ युद्धक्षेत्र में पहुँचीं । वहाँ कुरुकुल की विधवा बहुएँ विलाप करने लगीं । यह क्रंदन सुनकर कुपित हुई गांधारी ने कहा : ''कृष्ण ! कान खोल के सुन लो । मेरे हृदय की पीड़ा शाप के रूप में निकल रही है । अगर तुम चाहते तो युद्ध रुक सकता था ।

मैं गांधारी अपनी तपस्या के बल का उपयोग करके तुमको शापित करती हूँ कि जैसे मेरे होते मेरे बच्चे मर गये, ऐसे कृष्ण ! तुम्हारे होते तुम्हारे सारे यदुवंशी भी मर-मिटेंगे । मेरे बेटे आपस में ही चचेरे भाइयों से लड़ मरे, ऐसे ही तुम्हारे बेटे आपस में ही लड़ मरेंगे और एक साधारण कारण से संसार छोड़ने का दिन तुम्हारे लिए आयेगा । आज जैसे ये भरतवंश की स्त्रियाँ विलाप कर रही हैं, उसी प्रकार तुम्हारे कुटुम्ब की स्त्रियाँ भी अपने बंधु-बांधवों के मारे जाने पर सिर पकड़कर रोयेंगी ।''

लेकिन श्रीकृष्ण का विवेक व सामर्थ्य का सदुपयोग और समता गजब की है ! श्रीकृष्ण मुस्करा रहे हैं कि ''गांधारी ! तूने जो कहा है वही हो, उसके सिवाय और कोई उपाय भी नहीं है क्योंकि यदुवंशी इतने बलवान हैं कि उनको मनुष्य तो मार ही नहीं सकते हैं और जो पैदा हुए हैं उनको मरना तो जरूरी है । उनको देवता, असुर, यक्ष, गंधर्व और किन्नर भी नहीं मार सकते हैं तो आपस में लड़ेंगे तभी तो मरेंगे ! प्रकृति का नियम पूरा होगा । जो होनी है वही तुमने कह दी । ठीक है, तुम्हारा वचन सच्चा हो लेकिन एक बात मान ले गांधारी ! तू चाहे मुझे शाप दे, चाहे मेरे बेटों को दे लेकिन अपना दिल खराब मत कर, अपना दिल मत तपा । थोड़ी शांति ले, अपने चित्त की रक्षा कर । अपने सामर्थ्य का दुरुपयोग करके और ताप मत बढ़ा । ईश्वर की नियति है कि जो पैदा होते हैं उनको जाना होता है और उसमें कुछ-न-कुछ निमित्त बनता है । यदुवंशियों का ऐसा निमित्त है तो होकर रहेगा, क्या बड़ी बात है ! लेकिन तू अपने दिल को दुःखी करे या सुखी करे यह तेरे हाथ की बात है, तेरे विवेक की बात है । गांधारी ! तू विवेक का उपयोग कर ।''

कैसे हैं विवेक का आदर करनेवाले कृष्ण ! मैं कृष्ण को प्यार नहीं करूँगा तो क्या करूँगा ? आप ही बताओ । कितने प्यारे हैं, कितनी समता है उनमें ! कितना विवेक और सामर्थ्य का सदुपयोग है !

श्रीकृष्ण कालिय नाग को नाथते हैं । उसके फनों पर नृत्य करते हैं । फनों पर अपनी एड़ी ठोकते तो उसके फन टूटते और फिर बन जाते,

फिर टूटते फिर दूसरे बन जाते और श्रीकृष्ण बंसी बजाये जा रहे हैं । आप जरा सोचिये कि यमुना की गहराई में श्रीकृष्ण गये हैं और कालिय के फनों पर नाच रहे हैं तथा बंसी बजाये जा रहे हैं तो बंसी में पानी घुसेगा कि नहीं घुसेगा ? बंसी बजेगी कैसे ?

आप यहाँ विवेक का उपयोग करिये। कालिय नाग अर्थात् वासनाओं का पुंज । एक वासना मिटी तो दूसरी उठी, दूसरी को मारो तो तीसरी उठी... वे फन उठ रहे हैं लेकिन श्रीकृष्ण अपने विवेक की बंसी बजाये जा रहे हैं, अपना आनंद उभारे जा रहे हैं। कालिय की पत्नी प्रार्थना करती है अर्थात् वासनाएँ आ जाती हैं । कालिय प्रश्न करता है कि ''प्रभु ! आप ही ने सृष्टि बनायी, विषधर भी आपने बनाये और अमृत पीनेवाले देवता भी आपने बनाये। इसमें मेरा क्या कसूर ? मेरा विषैला स्वभाव है तो आपकी सृष्टि का है।''

'भागवत' में आता है कि श्रीकृष्ण वहाँ चुप हो गये । श्रीकृष्ण को कालिय की यह विवेकपूर्ण बात माननी पड़ी। विवेक की तो मूर्ति हैं श्रीकृष्ण ! वे बोले : ''अच्छा, मैं तुझे नहीं मारता हूँ लेकिन तू यहाँ से चला जा, बहुतों को हानि होती है । मेरा स्वभाव आनंद बाँटना है और तू आनंद में विघ्न करता है।''

कालिय को ज़ीवनदान दे दिया श्रीकृष्ण ने । उसको मारा नहीं, उसका विष छीना नहीं लेकिन उसको दूसरी जगह पर भेज दिया । ऐसे ही आपके जीवन में जो भी काम है, क्रोध है, लोभ है, मोह है, उनको आप मार डालें - यह मैं नहीं कहता हूँ, आप उनकी जगह बदल दीजिये ।

कामना है कि 'यह पाऊँ, वह पाऊँ...' तो भगवान को पाने की कामना कीजिये, शांति पाने की कामना कीजिये, एकांत एवं मौन में रहने की कामना कीजिये और लोगों की भीड़ में आना है तो लोक-मांगल्य की कामना कीजिये । आप कामना की करवट बदल देंगे तो वह कामना राम को ले आयेगी, काम राम में बदल जायेगा । आपके विवेक का सदुपयोग हो जायेगा । ऐसे ही क्रोध है । क्रोध को कब तक कुचलोगे ? क्रोध को जरा मोड़ दें । लोभ को मोड़ दें । लोभ बढ़े तो जप का लोभ कर दें, ध्यान का लोभ कर दें, परोपकार का लोभ कर दें, प्रभु-ज्ञान का लोभ कर दें । लोभ को मोड़ दें बस ! मोह को, ममता को मोड़ दें ।

तुलसी ममता राम से समता सब संसार ।

'यह सब सुखभोग तो देख लिया । हे प्रभु ! अब कृपा करो...'- यह विवेक है । कितनी भी वाहवाही मिले, कितने भी भोग मिलें, सुविधा मिले लेकिन अंत में क्या ? कब तक ? इसलिए मिले तो सच्चा सुख मिले, अपने-आपका सुख मिले, अपने आत्मा का सुख मिले ।

आपका आत्मा आनंदस्वरूप है, सुखस्वरूप है । शोक, दुःख अविवेक से आता है, चिंता अविवेक से आती है, भय अविवेक से आता है ।

विवेक को उभारते रहो । विवेक उभरेगा तो वैराग्य बढ़ेगा, षट्संपत्ति अपने-आप आ जायेगी । शम, दम, तितिक्षा, समाधान, श्रद्धा, ईश्वर-प्रणिधान - ये छः गुण अपने-आप आयेंगे । मोक्ष की इच्छा अपने-आप आयेगी । मोक्ष माना सब दुःखों से सदा के लिए छूट जायें और परम सुख को पा लें । ❒

* गुरुद्रोह ईश्वरद्रोह के बराबर है ।

* अनेक गुरु करना खराब बात है । गुरु से धोखा करना और उनकी आज्ञा का उल्लंघन करना बहुत खराब बात है ।

* अपना कोई गुरु होना अच्छी बात है लेकिन गुरु का त्याग करना बहुत खराब बात है । **- स्वामी शिवानंदजी सरस्वती**

महाविजेता होने की कुंजी

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

जगत में जो भी दोष हैं - छोटे-मोटे दुःख-सुख से लेकर बड़े-बड़े भारी दुःख और सुख, यहाँ तक कि जन्म और मृत्यु का भी जो दुःख है, वह दुःख भी चित्त के दोष से होता है। बार-बार हम जन्म लेते हैं, माता के गर्भ में उलटे लटकते हैं, फिर संसार में आते हैं, बचपन का कष्ट सहते हैं... कदम-कदम पर पराधीनता महसूस करते हैं। जवानी में काम-क्रोध सताता है, राग-द्वेष सताता है, भय, चिंता, घृणा, ईर्ष्या, स्पर्धा सताती है; बुढ़ापे में रोग सताते हैं और अंत में मौत तो सबके लिए खड़ी है। ये सारे-के-सारे जो दुःख हैं वे चित्त के दोष से प्राप्त होते हैं।

ऐसा नहीं है कि हम धनवान नहीं हैं इसलिए दुःखी हैं, हमारे पास प्रमाणपत्र नहीं है इसलिए हमारा जन्म-मरण होता है, हम कुँआरे हैं इसलिए जन्म-मरण होता है या शादी की है इसलिए जन्म-मरण होता है। नहीं, हमने अपने चित्त को चैतन्य के प्रसाद से अतृप्त रखा है इसलिए हमारा चित्त सुख के लिए बाहर प्रवृत्ति कर-करके क्षणिक सुख में उलझ रहा है। क्षणिक सुख में उलझते-उलझते हमारा चित्त यह महसूस करता है कि 'इतना हो जाय, इतना मिल जाय, इतना और ले लूँ, इतना और कर लूँ...' लेकिन उस चित्त को इतना करने से, इतना लेने से, इतना बनने से भी पूर्ण संतोष कभी नहीं होता। पूर्ण तो एक परमात्मा है। चित्त को उस परमात्मा में टिकाने के लिए यह श्लोक हमें उपाय बता रहा है :

सत्संगो वासनात्यागः स्वात्मज्ञानविचारणम् ।
प्राणस्पंदननिरोधश्च इत्युपायाः चेतसो जयेत् ॥

'सत्संग, वासना का त्याग, अपने आत्मा के ज्ञान का विचार और प्राण के स्पंदन का निरोध - इन उपायों से चित्त को जीतें।'

सत्संग करें। सत्संग से बहुत सारी बुराइयाँ मिटती हैं और अनगिनत अद्‌भुत लाभ होते हैं लेकिन परम लाभ है सत्यस्वरूप परमात्मा का ज्ञान, परमात्मविश्रांति, परमात्मप्रीति, नित्य नवीन रस ! सत्यस्वरूप जो ईश्वर है, जो आदि से सत् है, युगों से सत् है, अभी सत् है और बाद में भी सत् रहेगा तथा बड़े-बड़े धनवान जहाँ से धन सँभालने की बुद्धि लाते हैं, सत्ताधीश सत्ता सँभालने की योग्यता लाते हैं, हजारों-हजारों सुंदरों को जहाँ से सौंदर्य प्राप्त हुआ है, बुद्धिमानों को बुद्धि प्राप्त हुई है, उसको 'परमात्मा' बोलते हैं, उसको 'आत्मा' बोलते हैं - **सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म ।** और वही सनातन सत्य है। बाकी तो ये सत्य से माँगी हुई चीजें लेकर हमलोग थोड़ी देर के लिए कुछ बन बैठे, थोड़ी देर के लिए कुछ हो गये लेकिन ऐसे हमारे जैसे हजारों-हजारों पैदा हो-होकर जिसमें लीन हो गये उस सत्यस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति सत्संग से होती है। इसलिए श्लोक कहता है - जीवन में सत्संग होना चाहिए।

सत्संग चार प्रकार का होता है। बुद्धिवृत्ति सूक्ष्म करके सत्यस्वरूप परमात्मा में प्रतिष्ठित हो जाना - यह पहले नंबर का सत्संग है। राजा जनक, महात्मा बुद्ध, महावीरजी, कबीरजी, शंकराचार्यजी, नानकजी, ज्ञानेश्वर महाराज, तुकाराम महाराज तथा और भी नामी-अनामी

महापुरुष जैसे सत्यस्वरूप में ठीक-से प्रतिष्ठित हो गये, वैसे प्रतिष्ठित होना यह पहले नंबर का सत्संग है। उन महापुरुषों के सान्निध्य में बैठकर सत्संग सुनना यह दूसरे नंबर का सत्संग है। जिन्होंने उन पुरुषों की दर्ज की हुई वाणी आदर से पढ़ी और समझी उन्होंने तीसरे नंबर का सत्संग किया और जिन्होंने उनकी वाणी पंडितों से, विद्वानों से पाठ लगाकर समझी और बाद में फिर वह दृष्टांत इधर-उधर आकर कथा हो जाता है- यह चौथे नंबर का सत्संग है।

सत्संग से आपके अंदर असंगत्व की प्राप्ति होती है। असंगत्व क्या है ? देखती आँखें हैं लेकिन संग किया कि 'मैं देख रहा हूँ', सुनते कान हैं लेकिन संग हो गया कि 'मैं सुनता हूँ', चखती जीभ है लेकिन संग हो गया कि 'मैं चखता हूँ', सूँघती नाक है लेकिन सोचते हैं कि 'मैंने सूँघा', सोचता मन है और आप कहते हैं कि 'मैं सोच रहा हूँ', निर्णय लेती बुद्धि है और कहते हैं कि 'मेरा निर्णय है'... आप क्या हैं, महाराज ? आप टुकड़े-टुकड़े होकर बँट गये हुजूर ! अब क्या होगा कि सत्संग से आपको पता चलेगा कि देखनेवाली तो ये इन्द्रियाँ हैं, सुननेवाली भी इन्द्रियाँ हैं, चलनेवाली इन्द्रियाँ हैं और सूँघनेवाली इन्द्रियाँ हैं :

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥

'वास्तव में संपूर्ण कर्म सब प्रकार से प्रकृति के गुणों द्वारा किये जाते हैं तो भी जिसका अंतःकरण अहंकार से मोहित हो रहा है, ऐसा अज्ञानी 'मैं कर्ता हूँ' ऐसा मानता है।'

(गीता : ३.२७)

प्रकृति में ये गुण और कर्म सब हो रहे हैं। अहंकार से जो विमूढ़ हो-होकर अपनेको कर्ता मानता है उसको ही कर्मों के फल के अनुसार जन्म-मरण के चक्र में जाना पड़ता है लेकिन जो परमात्म-ज्ञान पा लेता है, मन, इन्द्रिय, अंतःकरण से अपनेको पृथक् मान लेता है वह कर्म करते हुए भी अलिप्त हो जाता है। उसकी अकर्ता-पद में विश्रांति हो जाती है। तो सत्संग से असंगत्व आता है, निःसंगता आती है। निःसंगता से, असंगता से आत्मविश्रांति मिलती है और आत्मविश्रांति से जीवन्मुक्ति का अनुभव होता है।

चित्त पर विजय प्राप्त करने का दूसरा उपाय है वासना का त्याग। वासना दो प्रकार की होती है : मलिन वासना और शुद्ध वासना। मलिन वासना क्या है ? करोड़ों जन्मों के संस्कार हैं। आप कभी निराश नहीं होना, कभी हताश नहीं होना; अपने दोष या अवगुण देखकर कभी ऐसी गाँठ नहीं बाँध लेना कि 'अपना काम नहीं है भाई भगवान के रास्ते चलना ! अपना काम नहीं है ईश्वर के दर्शन करना। अपने में तो देखो लोभ है, अपने में यह है, अपने में वह है... ।' देवता ! करोड़ों जन्मों के जो संस्कार हैं, करोड़ों जन्मों की जो मैली चादर है वह धोते-धोते साफ होगी, रंग लगते-लगते लगेगा लेकिन आप सोचेंगे कि 'होगा नहीं, होगा नहीं, होगा नहीं' तो आप चादर को और मैली कर देंगे। असंख्य जन्मों से आप जन्म-मरण के चक्कर में आ रहे हैं तो असंख्य जन्मों के संस्कार आपके चित्त पर हैं। बुद्धि की मंदता, विषयों में आसक्ति, दुराग्रह, अपने सिद्धांत में पकड़ - ये असंख्य जन्मों की आदतें हैं। तो अब ईश्वर के सिद्धांत में अपने सिद्धांत को मिलाने के लिए मन जल्दी तो तैयार नहीं होगा। संतों के अनुभव में अपना अनुभव मिला देने में आदमी जल्दी तैयार नहीं होगा। फिर भी आप चिंता न करें। अभ्यास करते-करते ऐसा दिन आ जाता है कि आपके लिए यह सरल हो जायेगा।

बस, मलिन वासना का त्याग करने के लिए तत्पर होना चाहिए । पचीस बीड़ी रोज पीते थे, आज चौबीस कर दो । रोज दो घंटे गपशप में जाते थे, आज डेढ़ घंटा कर दो । डेढ़ का सवा हो जायेगा, सवा का एक हो जायेगा । इस प्रकार तुच्छ वासनाएँ, दुष्ट वासनाएँ त्यागना; इससे तुम्हारा सामर्थ्य बढ़ेगा ।

तीसरी बात है **स्वात्मज्ञानं विचारणम्** । अपने आत्मा के ज्ञान का विचार - 'मैं कौन हूँ ? यह (जगत) क्या है ? दुःख किसको होता है ? दुःख आता है चला जाता है, सुख आता है चला जाता है । मैं इनसे निर्लेप इनका साक्षी हूँ ।' अगर अंदर आप भगवान की शांति चाहते हैं, सुख चाहते हैं, खुशी चाहते हैं और बाहर की नश्वर चीजें भी चाहते हैं तो आप जब अंदर ध्यान करेंगे न, तो बाहर की चीजें याद आयेंगी । इसलिए आत्मज्ञान का विचार करें कि 'बाहर को भी सत्ता देनेवाला वह अंदरवाला है, परमात्मा है । हरि ॐ तत्सत्, बाकी सब गपशप ।' यह आपके अंदर की शक्तियों को विकसित कर देगा ।

त्याग या वैराग्य बिना का विचार टिकता नहीं है । ज्यों-ज्यों आप विचारते जायेंगे त्यों-त्यों आपको संसार की नश्वरता और परमात्मा की शाश्वतता का अनुभव होगा । अगले जन्म के पिता, माता, मित्र, बंधु, घर, मकान, वैभव जो भी था वह अभी नहीं है लेकिन अगले जन्म में जो परमात्मा तुम्हारे साथ था वह अभी भी है । इस जन्म के मित्र, कुटुंबी, बंधु मृत्यु का एक झटका आते ही पराये हो जायेंगे लेकिन वह पराया नहीं होगा । इस प्रकार जो पहले तुम्हारा था, अभी तुम्हारा है और मरने के बाद भी जो तुम्हारा साथ नहीं छोड़ता उस आत्मा के ज्ञान को बढ़ाते जाओ ।

शास्त्र तो यूँ कहते हैं कि जिसको अपने शरीर की मलिनता से, देह की मलिनता से वैराग्य नहीं आता उसको फिर और वैराग्य के लिए उपदेश भी क्या देना ? सुंदर नाक, चमकते दाँत दिखते हैं लेकिन नाक ऊँची करके देखो, लींट (रेंट) निकलती है और दाँतों से थूक व मरे हुए जीवाणुओं की बदबू ! तो देह में, इस दुःखालय में अगर कोई चमक है या कोई स्वाद है या कोई रस है तो उस परमात्मा का है । उस परमात्मा से संबंध टूट जाय तो इस शरीर की कोई कीमत नहीं है । इसको उठाने के लिए लोग चाहिए और इसको जलाने के लिए रुपये चाहिए लेकिन जब तक उस चैतन्य से संबंध जोड़ने की इस शरीर में क्षमता है तब तक यह शरीर चाहे किसीका भी हो, अपनी-अपनी जगह पर ठीक है । वह संबंध टूट गया तो इसकी कोई कीमत नहीं । चाहे कितना बड़ा सुखी, धनी के घर पला हो, चाहे गरीब के घर पला हो लेकिन इसका मूल्य तो तब है जब वह परमात्मा का सान्निध्य ले सकता है । परमात्मा की सत्ता, परमात्मा की स्फूर्ति जब तक लेता है तब तक इसकी कीमत है । परमात्मा की सत्ता, स्फूर्तिवाला अंतःकरण निकल जाते ही इसको उठाने के लिए दूसरे लोगों की जरूरत पड़ती है । तो शरीर की नश्वरता का बार-बार विचार करें और आत्मा की शाश्वतता का बार-बार ख्याल करें ।

चौथा उपाय है **प्राणस्पंदननिरोधश्च** - प्राणों के स्पंदन का निरोध करना । हमारी दस इन्द्रियाँ हैं । उनका स्वामी मन है और मन का स्वामी प्राण है । प्राणायाम में बड़ी शक्ति है । अगर प्रतिदिन नियमित थोड़े प्राणायाम किये जायें तो आदमी को जल्दी-से रोग नहीं होगा । संसार के सब कार्य करते समय, संसार की सब सुविधाएँ भोगने पर भी जो लाभ नहीं हुआ है, प्राणायाम की सिद्धि से उससे अनंत गुना लाभ हो सकता है ।

प्राणों का निरोध करने से मनोजय होता है, चित्त के प्रसाद की प्राप्ति होती है । जितना जिसका

प्राण निरुद्ध है, जितना जिसने प्राण को रोका है या प्राण की विधि को जानता है उतना वह समय के अनुसार, वक्त के अनुसार बाजी मार लेगा। निद्रा में आपके शरीर को आराम मिलता है और प्राणायाम करके जब आप समाधि में जाते हैं तो आपको स्वयं को आराम मिलता है। आप राम के वास्तविक तत्त्व में पहुँच जाते हैं तो फिर विकारों का वहाँ प्रभाव नहीं जमता। तो प्राणायाम तुम्हारे जीवन में बहुत-बहुत योग्यता बढ़ाता है।

प्राणायाम आदि से चित्त निरुद्ध होता है। चित्त जब निरुद्ध होता है तो फिर देव की पूजा बाहर करने का परिश्रम नहीं पड़ता और देव को खोजने की भी जरूरत नहीं पड़ती है। संसार की हठीली आसक्ति, हठीली विषय-लोलुपता, परिणामों की हठीली आकांक्षा हमारे चित्त को एकाग्र होने में बाधा करती है और वह हमको असंतुष्ट रखती है लेकिन चित्त के निरोध से जो संतोष मिलता है उससे आदमी सतत संतुष्ट रहता है। गीताकार ने कहा है :

संतुष्टः सततं योगी। (गीता : १२.१४)

जिसके चित्त की वृत्तियों का पेट खाली हो गया ऐसा योगी सतत संतुष्ट रहता है। इस लोक का तो क्या अतल का, वितल का, तलातल का, नागकन्याओं के लोक का, रसातल का, महातल का, भूलोक, भुवर्लोक, तपःलोक, स्वर्गलोक आदि का सब सुख मिलाकर एक आदमी को दिया जाय फिर भी उसको सतत संतोष नहीं हो सकता लेकिन चित्त के प्रसाद से आदमी को सतत संतोष मिलता है। इसलिए यह श्लोक हमें सीख दे रहा है :

सत्संगो वासनात्यागः... सत्संग, वासना का त्याग, आत्मज्ञान का विचार और प्राणों के स्पंदन का निरोध - इन उपायों से चित्त को जीतें। चित्त पर विजय प्राप्त होते ही आदमी महाविजेता हो जाता है। ❑

सत्शिष्य के हृदय से...

- स्वामी मुक्तानंदजी

१. ब्रह्मवादी जिसे अनुभवयुक्त सिद्धांत से **'सर्वं खल्विदं ब्रह्म'** कहते हैं, भक्तगण जिस जगत को **'वासुदेवः सर्वमिति'** कहते हैं, जड़वादी जिसे निसर्ग और कारणवादी कारण कहते हैं, मुक्तानंद उसी जड़-चेतनात्मक जगत को गुरु नित्यानंद कहते हैं।

२. संसार में अगर कोई राजा हो, वह विजयी हो, सत्तावान हो, आस-पास नौकर-चाकर हों, घर में हाथी-घोड़े बँधे हों तो भी गुरु-प्रेमामृत की मस्ती बिना वह मृतक है।

३. भाषाएँ तो बहुत-सी आती हैं, देश तो अनेक देखे हैं, डिग्रियाँ भी अनेक पायी हैं, यश की भी कमी नहीं लेकिन आत्मानंद की कमी से वह भी भिखारी है।

४. जैसे बौद्धों का शून्य, भक्तों का प्रेम, प्रार्थियों का लक्ष्य, योगी की निर्विकल्प समाधि और ज्ञानी का चैतन्य है, वैसे ही हम साधकों के तो मेरे सद्गुरु चैतन्य हैं। **(पुस्तक 'मुक्तेश्वरी' से)**

संत कबीरजी ने कहा है :

अलख पुरुष की आरसी, साधु का ही देह।
लखा जो चाहे अलख को, इन्हीं में तू लख लेह॥ ❑

* बुद्धिमान पुरुष संसार की चिंता नहीं करते लेकिन अपनी मुक्ति के बारे में सोचते हैं। मुक्ति का विचार ही त्यागी, दानी, सेवापरायण बनाता है। मोक्ष की इच्छा से सब सद्गुण आ जाते हैं। संसार की इच्छा से सब दुर्गुण आ जाते हैं।

* मन में यदि भय न हो तो बाहर चाहे कैसी भी भय की सामग्री उपस्थित हो जाय, आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकती। मन में यदि भय होगा तो तुरंत बाहर भी भयजनक परिस्थितियाँ न होते हुए भी उपस्थित हो जायेंगी। वृक्ष के तने में भूत दिखने लगेगा। **('जीवन रसायन' से)**

जीवन हो ज्ञानसंयुक्त

- पूज्य बापूजी

मैंने सुनी है कहानी कि एक लँगड़ा आदमी बद्रीनाथ के रास्ते पर बैठा था और कहे जा रहा था कि 'लोग यात्रा करने को जा रहे हैं । हमारे पास पैर होते तो हम भी भगवान के दर्शन करते ।' पास में एक साथी बैठा था । वह सूरदास था । उसने कहा : ''यार ! मैं भी चाहता था ईश्वर के दर्शन करूँ लेकिन मेरे पास आँखों की ज्योति नहीं है । कम-से-कम ईश्वर के धाम में जाने की मेरी रुचि तो है लेकिन आँखें नहीं हैं...''

वहाँ से एक महात्मा गुजरे । महात्मा ने कहा : ''उसकी आँखें और तेरे पैर दोनों का सहयोग हो जायेगा तो तुम बद्रीधाम में पहुँच जाओगे ।''

ऐसे ही ज्ञान आँख है । जीवन के तत्त्व का ज्ञान जो है वह आँख है लेकिन वह ज्ञान अगर कर्म में नहीं आता तो ज्ञान लँगड़ा रह जाता है । कर्म करने की शक्ति जीवन में है लेकिन ज्ञान के बिना है तो उस अंधी शक्ति का दुरुपयोग हो जाता है और जीवन बरबाद हो जाता है । यही कारण है कि जिनके जीवन में जप, तप, ज्ञान, ध्यान या गुरुओं का सान्निध्य नहीं है, ऐसे व्यक्तियों की क्रियाशक्ति राग, द्वेष और अभिमान को जन्म देकर हिंसा आदि का प्रादुर्भाव कर देती है । शक्ति है कर्म करने की लेकिन आत्मज्ञान नहीं है, जप-तप नहीं है तो वह शक्ति भ्रष्टाचार की तरफ, दूसरों का अमंगल करने की तरफ और अपने अहंकार को बढ़ाने की तरफ लगकर नष्ट हो जाती है । अतः क्रियाशक्ति और ज्ञानशक्ति का समन्वय हो ।

आज तक ऐसा मनुष्य, ऐसा प्राणी पैदा ही नहीं हुआ जो बिना क्रिया के, बिना कर्म के रह सके । कर्म करना ही है तो ज्ञानसंयुक्त कर्म करें । शास्त्रों में तो यहाँ तक आया है कि ज्ञानी महापुरुष, जगत की नश्वरता जाननेवाले महापुरुष भी कर्म करते हैं क्योंकि उनको देखकर दूसरे उनका अनुसरण करेंगे । ज्ञान के द्वारा, भक्तियोग के द्वारा कर्म करने की कला को सुसज्जित कर दें । कर्म ज्ञानसंयुक्त होंगे तो जीवनदाता तक पहुँचा देंगे । कर्मों से कर्मों को काटा जाता है लेकिन कर्मों में अगर ज्ञान की सुवास होती है तभी कर्म कर्मों को काटेंगे । यदि उनमें अहंकार की सुवास होगी तो कर्म विकर्मों को ले आयेंगे, कुकर्मों को ले आयेंगे । इसलिए कर्म के साथ ज्ञान का समन्वय होना चाहिए । क्रिया ज्ञानसंयुक्त हो । श्रीकृष्ण के जीवन में देखो, ज्ञानसंयुक्त क्रिया है । राजा जनक के जीवन में ज्ञानसंयुक्त क्रिया है । रामजी के जीवन में ज्ञानसंयुक्त कर्म है ।

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा ।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥

(रामचरित. बा.कां. : २०४.४)

यह ज्ञान की महिमा है ।

गुर तें पहिलेहिं जगतपति जागे रामु सुजान ।

(रामचरित. बा.कां. : २२६)

गुरु विश्वामित्रजी जगें उसके पहले ही श्री रामचंद्रजी जग जाते थे । भगवान ज्ञानदाता गुरुओं का इतना आदर करते थे ! तो जीवन में ज्ञान की आवश्यकता है ।

ज्ञान में सुख भी है, समझ भी है । जैसे मेरे मुँह में रसगुल्ला रख दिया जाय और मैं प्रगाढ़ नींद में हूँ तो मिठास नहीं आयेगी लेकिन जब मेरी वृत्ति जिह्वा से जुड़ जायेगी तो रसगुल्ले का ज्ञान

होते ही, मिठास का ज्ञान होते ही सुख आयेगा।

ब्रह्मचर्य रखना अच्छा है; शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास होता है और प्रसन्नता लम्बे समय तक रहती है। यह ज्ञान है, समझ तो है लेकिन जब सुख की लोलुपता आ जाती है तो आदमी ब्रह्मचर्य से गिरकर क्षण भर के लिए विकारी सुख लेता है और फिर पछताता है। तो आपको ज्ञान के साथ सुख की भी जरूरत है।

माना है कि झूठ बोलना ठीक नहीं है, किसीका अहित करने में फायदा नहीं है, सत्य बोलना चाहिए। सत्य बोलते हैं लेकिन जब दुःख पड़ता है तो सत्य को छोड़कर असत्य बोल देते हैं। क्यों ? सुख के लिए। झूठ किसलिए बोलते हैं ? सुख के लिए। ब्रह्मचर्य खंडित क्यों करते हैं ? सुख के लिए। तो माँग तुम्हारी सुख की है। जैसे गंगा गंगोत्री से चली। वह गुनगुनाती, लहराती हुई गंगासागर की ओर भाग रही है। गंगा जहाँ से प्रकट हुई है वहीं जा रही है। ऐसे ही तुम्हारा वास्तविक स्वरूप जो है, तुम आनंदकंद सच्चिदानंद परमात्मा से प्रकट हुए हो, स्फुरित हुए हो। तुम जिसको 'मैं' बोलते हो न, वह 'मैं' आनंदस्वरूप परमात्मा से स्फुरित हुई है और वह आनंदस्वरूप परमात्मा तक पहुँचने के लिए ही सारी क्रियाएँ करती है। जैसे गंगा चली तो गंगासागर तक पहुँचने की क्रिया करती है लेकिन हमने स्वार्थपरायण होकर उसके बहाव को रोककर एक तालाब बना दिया, उसको थाम दिया तो वह पानी गंगासागर तक नहीं पहुँचता। ऐसे ही सुख की प्राप्ति की इच्छा है और हमारी दौड़ सुबह से शाम तक सुख तक पहुँचने की है लेकिन जहाँ हम स्वार्थी, ऐन्द्रिक, बिना ज्ञान के, बिना समझ के सुख को पाने की चेष्टा करते हैं तो जैसे गंगा को रास्ते में गड्ढों में बाँध लिया जाय तो वह गंगासागर तक नहीं पहुँच पायेगी, ऐसे ही हम अपने चित्त की धारा को अज्ञानवश किसी मान्यता में उँडेल देते हैं तो हमारा जीवन रास्ते में ही रुक जाता है। हालाँकि प्रयत्न तो हमारा सुख के लिए है लेकिन सुखस्वरूप हमारा आत्मा है, इस प्रकार का ज्ञान न होने के कारण हम वासनाओं के गड्ढे में अटक जाते हैं और जीवन पूरा हो जाता है। वासनाओं के प्रभाव से कई शरीरों में भटकना पड़ता है।

तो जो-जो नियम हम शास्त्र में सुनते हैं या स्वीकार करते हैं, उन्हें हम तब खंडित करते हैं जब हमें भय हो जाता है अथवा सुख की लोलुपता घेर लेती है, तब हम उनसे नीचे आ जाते हैं। तो अब क्या करना चाहिए ?

भय और सुख की लोलुपता, दोनों को मिटाना हो तो भी ज्ञान की जरूरत पड़ेगी और वह ज्ञान आत्मज्ञान हो अथवा आत्मज्ञान पाने की, सुख पाने की तरकीब, योग-युक्तियाँ हों, योग का ज्ञान हो, उससे हमें जब भीतर से सुख मिलने लगेगा तो निर्भयता भी आने लगेगी और हमारी समझ के खिलाफ हम फिसल नहीं सकेंगे।

उस ज्ञान के बिना मनुष्य चाहे कितनी-कितनी कुछ क्रियाएँ कर ले लेकिन उसकी क्रियाओं का फल उसकी परेशानियों का कारण बन जाता है। वे ही क्रियाएँ अगर ज्ञानसंयुक्त होती हैं तो क्रियाओं के फलस्वरूप अकर्तृत्व पद की प्राप्ति हो जाती है। तो वेदांतिक ज्ञान, उपनिषदों का ज्ञान एक ऐसी कला है, कर्मों में ऐसी योग्यता ले आता है, ऐसी कुशलता ले आता है कि मनुष्य का जीवन नश्वर जगत में होते हुए भी शाश्वत के अनुभव से संयुक्त हो जाता है।

योगः कर्मसु कौशलम्। (गीता : २.५०)

फिर मरनेवाली देह में आत्मा के दीदार होने लगते हैं। मिटनेवाले संबंधों में अमिट संबंध के दर्शन होने लगते हैं। गुरुभाइयों का संबंध भी मिटनेवाला है। गुरु-शिष्य का संबंध भी मिटनेवाला है लेकिन वह संबंध अमिट की प्राप्ति करा देता है अगर ज्ञान है तो; और ज्ञान नहीं है तो मिटनेवाले संबंधों में ऐसा मोह पैदा होता है कि चौरासी-चौरासी लाख जन्मों तक आदमी भटकता रहता है। □

भला, ऐसा कल्याण किससे हो सकता है ?

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

भगवान रामचंद्रजी के गुरुदेव श्री वसिष्ठजी बोले : ''हे रामजी ! राज्य की लक्ष्मी तब प्राप्त होती है जब रण में दृढ़ होकर युद्ध करते हैं और जय होती है । यदि केवल मुख से कहें कि मेरी जय हो तो नहीं होती है ।''

'मेरी जय हो... मैं राजा बन जाऊँ...' - इस प्रकार केवल बोलते रहने से क्या राजा बन सकते हो ? नहीं । राजा बनना हो तो युद्ध करना पड़ता है । राजलक्ष्मी पानी है तो जूझना पड़ता है, ऐसे ही ब्रह्मलक्ष्मी प्राप्त करनी है, ब्रह्मज्ञान पाना है तब भी जूझना तो पड़ेगा न ! कमजोर-दिल नहीं बनना चाहिए । जितना कमजोर बनते हो उतना ज्यादा दुःखी होते हो और उतनी ज्यादा परेशानी होती है । जो पाना है उसकी तरफ ईमानदारी से चलो, ईश्वर को पाना है तो सतत चलते जाओ । पाना है ईश्वर को लेकिन शास्त्र और गुरु से मुँह मोड़ के चलोगे तो क्या खाक पाओगे ?

ऐसे ही ब्रह्मज्ञान को पाना है तो कठिनाइयों का सामना करते रहोगे, जूझते रहोगे और सतत चलते रहोगे तब काम होगा । एक बार हमने ठान लिया कि चालीस दिन का अनुष्ठान करना है तो बीच में से ही घर वापस चलने के लिए कुटुंबी हाथ-पैर जोड़ने लगे । हमारी माँ व उनकी बहू हाथा-जोड़ी कर रही थी, पूरा गाँव हाथा-जोड़ी कर रहा था लेकिन हमारा अडिग निश्चय रहा कि चालीस दिन पूरे होंगे तब चलेंगे । यदि ठान लिया है कि १०० दिन का अनुष्ठान करना है तो फिर ९९ दिन क्यों ? सौ दिन का ही करके रहेंगे । दो दिन भजन किया, दो दिन छोड़ दिया और दूसरे ढंग से चले... नहीं, भजन में सातत्य होना आवश्यक है ।

श्री वसिष्ठजी कहते हैं : ''हे रामजी ! ऐसा कल्याण पिता, माता और मित्र भी न करेंगे तथा तीर्थ आदि सुकृत से भी न होगा, जैसा कल्याण बारम्बार विचारने से मेरा उपदेश करेगा ।''

हाँ, ऐसा कल्याण माता, पिता, स्वजन, तीर्थ, धन, सत्ता से भी नहीं हो सकता है, जैसा कल्याण बारम्बार शास्त्र का विचार, ज्ञान का विचार करने से होता है । स्वजन दे-देकर क्या दे देंगे ? मकान दे देंगे, दुकान दे देंगे, सुविधा दे देंगे । उनसे आसक्ति होगी तो फिर तुम्हें तो अशांति होगी और मरना-जन्मना जारी रहेगा । लेकिन आत्मविचार करने से तो ऐसा कल्याण हो जाता है जो माता-पिता और स्वजन भी नहीं कर सकते । इसलिए गपशप में न लगें, बारम्बार आत्मविचार, ॐकार का जप, आत्मविश्रांति का अभ्यास करें । ❐

क्या जड़ और क्या चेतन ?

स्वामी विवेकानंदजी से एक आदमी ने आकर पूछा कि ''मुझसे एक शख्स ने सवाल किया था कि जड़ किसको कहते हैं और चेतन किसको कहते हैं ? मैंने उसको जवाब दिया कि पत्थर, पहाड़ आदि अर्थात् ठोस चीजें जड़ में शामिल हैं और जीव चेतन कहलाते हैं । मगर इस जवाब से उस आदमी को संतोष न हुआ । अब आप कुछ बतायें ।''

विवेकानंदजी ने बताया कि ''मैं ज्यादा तो कुछ नहीं समझता, मगर मेरे ख्याल में तो यह बात आती है कि जो भगवद्भजन करता है वही चेतन है और बाकी सब जड़ हैं ।''

सर्वोपरि व परम हितकर...

(देवर्षि नारदजी का शुकदेवजी को उपदेश - अंक १८९ से आगे)

जो पुरुष सदा यत्न किया करता है वह कभी दुःख नहीं पाता । मनुष्य को उचित है कि मोक्षप्राप्ति के लिए सदैव यत्नवान रहकर जरा, मृत्यु और रोगादि के चक्र से अपने प्रिय आत्मा की रक्षा करे । जैसे किसी बलवान धनुर्धर के छोड़े हुए बाण प्रतिपक्षी के शरीर में बिंधकर शरीर को पीड़ित करते हैं, वैसे ही मानसिक और शारीरिक व्यथाएँ प्राणियों को पीड़ित किया करती हैं। नित्य नयी-नयी कामनाओं से व्यथित, ग्लानियुक्त जीवन के अभिलाषी एवं विवश प्राणी के विनाश के लिए शरीर खींचा जाता है अर्थात् जीव की अधोगति के निमित्त शरीर सताया जाता है। जैसे घास-फूस के साथ जो जल की धारा आगे बहकर निकल जाती है वह लौटकर पीछे नहीं आती, वैसे ही शरीरधारियों की आयु को लेकर दिन-रातरूपी काल के जो प्रवाह प्रतिक्षण बहे चले जाते हैं, वे फिर लौटकर नहीं आते ।

शुक्लपक्ष के पीछे कृष्णपक्ष और कृष्णपक्ष के पश्चात् शुक्लपक्ष आया-जाया करते हैं तथा इनका आना-जाना उत्पन्न हुए मनुष्यों की आयु को क्षण-क्षण में कम करता हुआ एक क्षण के लिए भी नहीं रुकता । बारम्बार सूर्योदय और सूर्यास्त होने से बने हुए दिन व रात आदि कालों का प्रवाह स्वयं अजर-अमर बन प्राणियों को सुख-दुःख देता है, उनको मारता है और उत्पन्न किया करता है। काल के प्रभाव से ऐसे-ऐसे कार्य प्रत्यक्ष होते देखे जाते हैं, जिनके होने की संभावना की कल्पना तक कभी नहीं की गयी थी । जो प्राणी अथवा धनादि पदार्थ कल हमारी आँखों के सामने विद्यमान थे, वे आज नहीं रहे । मानो कल का दिन उन सबको अपने साथ लेता गया। यदि कर्मफ़ल-विधान ईश्वर अथवा दैव के अधीन न होता तो प्रत्येक मनुष्य जो चाहता वही कर सकता था । संयमी, चतुर एवं बुद्धिमान जन भी कर्महीन, विफल-जीवन अर्थात् दुःखी व दरिद्र देखे जाते हैं और महामूर्ख, निर्बुद्धि, सर्वगुणहीन तथा नीचातिनीच पुरुष सब प्रकार से भरे-पूरे और सुखी दिखायी पड़ते हैं। उनको कोई सज्जन और धर्मात्मा जन अच्छा नहीं समझते । इसी प्रकार न मालूम कितने लोग, जो सदैव पशु आदि की हिंसा किया करते हैं, (क्योंकि उनकी हिंसामयी प्रवृत्ति है) और जो रात-दिन दूसरे लोगों को धोखा दे ठगा करते हैं वे पतित-पामर जन भी जन्म भर सुख-चैन से अपना जीवन बिता देते हैं । देखो, ऐसे भी लोग हैं जो धनोपार्जन के लिए हाथ-पाँव नहीं हिलाते, चुपचाप बैठे रहते हैं, फिर भी उनके पास धन अपने-आप चला आता है और ऐसे भी अनेक लोग हैं जो धनोपार्जन के लिए निरंतर घोर परिश्रम किया करते हैं किंतु उनको धन नहीं मिलता । कोई-कोई चाहते हैं कि हमारे मरने के बाद हमारी संतान हमारी उत्तराधिकारी हो और इसलिए वे श्रीमान पुरुष संतानोत्पत्ति के लिए बड़े-बड़े प्रयत्न करते हैं किंतु उनका मनोरथ सफल नहीं होता । उनकी स्त्रियों के गर्भस्थापन ही नहीं होता । इसके विपरीत न मालूम कितने व्यभिचारी व्यभिचार करते और चाहते हैं कि कहीं उनकी प्रेयसी गर्भवती न हो जाय। वे गर्भ से वैसे ही डरते हैं जैसे साँप से मनुष्य किंतु ऐसों के हृष्ट-पुष्ट, चिरायु पुत्र माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध उत्पन्न होते हैं। (क्रमशः) ❒

'श्रीमद् भगवद्गीता' के बारे में महापुरुषों एवं विद्वानों के विचार

(गीता जयंती : ९ दिसम्बर)

भगवद्गीता मानव-जाति का वास्तविक धर्मग्रंथ है । यह पुस्तक की अपेक्षा एक जीवंत रचना है । इसमें हर युग के लिए एक नया संदेश तथा प्रत्येक सभ्यता के लिए एक नया अर्थ है । **– योगी श्री अरविंद**

भगवद्गीता के स्पष्ट ज्ञान से मनुष्य के अस्तित्व के सभी लक्ष्य पूर्ण हो जाते हैं । भगवद्गीता वैदिक धर्मग्रंथों के सभी उपदेशों का सारस्वरूप है ।

– श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी

गीता मेरा हृदय है ।
गीता मेरा उत्तम सार है ।
गीता मेरा अति उग्र ज्ञान है ।
गीता मेरा अविनाशी ज्ञान है ।
गीता मेरा श्रेष्ठ निवासस्थान है ।
गीता मेरा परम पद है ।
गीता मेरा परम रहस्य है ।
– भगवान श्रीकृष्ण

जब मैं भगवद्गीता पढ़ता हूँ और विचार करता हूँ कि ईश्वर ने कैसे इस ब्रह्माण्ड की रचना की तो अन्य प्रत्येक वस्तु अत्यंत ही मिथ्या भासित होती है । **– अल्बर्ट आइन्स्टाईन**

भगवद्गीता मनुष्य को शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा के समर्पण द्वारा विशुद्ध कर्म करने तथा अनियंत्रित, निरुद्देश्य आवेग एवं कामनाओं के वश होकर मानसिक विषयों में न फँसने को कहती है ।

जब मुझे बार-बार संशय होते हैं और मेरे चेहरे पर निराशाएँ स्पष्ट झलकती हैं तथा क्षितिज में आशा की कोई किरण दिखायी नहीं देती, तब मैं भगवद्गीता की ओर मुड़ता हूँ और मुझे उसमें एक सुकून की पंक्ति मिलती है और मैं तमाम दुःखों के बीच में तुरंत हँसने लगता हूँ । जो भगवद्गीता पर ध्यान केन्द्रित करते हैं वे दिन-प्रतिदिन एक नया आनंद, एक नया अर्थ प्राप्त करेंगे ।

केवल सात सौ श्लोकों में गीता ने सारे शास्त्रों और उपनिषदों का सार, गागर में सागर भर दिया है । गीता मेरी माँ है । **– गाँधीजी**

गीता को धर्म का सर्वोत्तम ग्रंथ मानने का यही कारण है कि उसमें ज्ञान, कर्म और भक्ति - तीनों योगों की न्याययुक्त व्याख्या है, अन्य किसी भी ग्रंथ से इसका सामंजस्य नहीं है । ऐसा अपूर्व धर्म, ऐसा अपूर्व ऐक्य केवल गीता में ही दृष्टिगोचर होता है । ऐसी अद्भुत धर्मव्याख्या किसी भी देश में और किसी भी काल में किसीने भी की हो, ऐसा जान नहीं पड़ता ।

ऐसा उदार और उत्तम भक्तिवाद जगत में और कहीं भी नहीं है ।

– श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

गीता हिन्दू दर्शन और नीतिशास्त्र के सबसे प्रामाणिक ग्रंथों में से एक है । **हमारे युवक एवं युवतियाँ यदि उसके चुने हुए श्लोकों का भी अध्ययन कर लें और उनका मनन करें तो वे अपने पूर्वजों के धर्म को समझ सकेंगे ।** हमने जिस उदात्त दर्शन, कला, साहित्य तथा सभ्यता को उत्तराधिकार में प्राप्त किया है, उन सबका विकास हमारे पूर्वजों के धर्म के आधार पर ही हुआ है ।

मनुष्य के तर्क की परिधि में आनेवाले

विषयों की व्याख्या की जा सकती है और उन्हें सिद्ध भी किया जा सकता है परंतु उसके परे के विषयों को समझने के लिए श्रद्धा और मनन की आवश्यकता है।

गीता की शिक्षा छोटों के लिए भी है और बड़ों के लिए भी, कर्मों में अत्यंत व्यस्त लोगों के लिए भी है और जीवन-संघर्ष से निवृत्त लोगों के लिए भी। निस्संदेह गीता सब कालों के लिए है। **– श्री राजगोपालाचार्यजी**

मेरा शरीर माँ के दूध पर जितना पला है, उससे कहीं अधिक मेरे हृदय और बुद्धि का पोषण गीता के दूध पर हुआ है। जहाँ हार्दिक संबंध होता है, वहाँ तर्क की गुंजाइश नहीं रहती। तर्क को काटकर श्रद्धा और प्रयोग, इन दो पंखों से ही मैं गीता-गगन में यथाशक्ति उड़ान भरता रहता हूँ। गीता मेरा प्राण-तत्त्व है। जब मैं गीता के संबंध में किसीसे बात करता हूँ तब गीता-सागर पर तैरता हूँ और जब अकेला रहता हूँ तब उस अमृत-सागर में गहरी डुबकी लगाकर बैठ जाता हूँ। **– संत विनोबाजी भावे**

श्रीमद् भगवद्गीता की महिमा अगाध और असीम है। यह ग्रंथ मनुष्यमात्र के उद्धार के लिए है। इस छोटे-से ग्रंथ में इतनी विलक्षणता है कि अपना वास्तविक कल्याण चाहनेवाला किसी भी वर्ण, आश्रम, देश, संप्रदाय, मत आदि का कोई भी मनुष्य क्यों न हो, इस ग्रंथ को पढ़ते ही इसके प्रति आकृष्ट हो जाता है। अगर मनुष्य इस ग्रंथ का थोड़ा-सा भी पठन-पाठन करे तो उसको अपने उद्धार के लिए बहुत ही संतोषजनक उपाय मिलते हैं। हरेक दर्शन के अलग-अलग अधिकारी होते हैं पर गीता की यह विलक्षणता है कि अपना उद्धार चाहनेवाले सब-के-सब इसके अधिकारी हैं।

– स्वामी रामसुखदासजी ❑

राष्ट्रसंत आसारामजी बापू एक महान पिता, पालक और पथ-प्रदर्शक हैं

पूज्य संत आसारामजी बापू एक महान विभूति हैं। वे किसी क्षेत्रविशेष के संत नहीं अपितु राष्ट्रसंत हैं। उन्होंने मात्र सनातन धर्म का प्रचार ही नहीं किया बल्कि शांति, साधना और सद्भावना का लोक-कल्याणकारी उपदेश समस्त मानव-जाति के लिए दिया है।

जो संत किसी गैर का दुःख देखकर भी व्यथित हो जाता हो, वह कैसे अपने आश्रम में रहनेवाले बच्चों के प्रति कठोर अथवा लापरवाह होगा ? महान संत तो सदा संतोष, नम्रता और त्याग की मूर्ति होता है, वह चलता-फिरता तीर्थ होता है, जो सदैव ज्ञान, संस्कार और आशीर्वाद देता रहता है।

हम स्वयं बापूजी के आश्रम (मोटेरा, अमदावाद) गये हैं, वहाँ चल रहे सेवाकार्य देखकर प्रभावित हुए हैं। शिक्षा का प्रचार-प्रसार, गौ-रक्षा और सेवा केन्द्र, आयुर्वैदिक पद्धति से अत्यंत कम खर्च पर इलाज, स्वयं के निवास के लिए तो छोटी कुटिया किंतु दूसरों के लिए विशाल सर्वसुविधायुक्त भवन, आध्यात्मिक उत्थान के लिए प्रवचन और साहित्य-सेवा आदि संस्कृति का महान प्रचार व लोकहित के अनेकों कार्य

सदैव हमारे राष्ट्र के महान संत श्री आसारामजी बापू और उनके आश्रमों, गुरुकुलों तथा साधकों के माध्यम से अनेक शहरों में चल रहे हैं।

पूज्य संत के दो गुरुकुलों में दुर्भाग्य से जो घटना घटी है, वह मात्र एक हादसा हो सकती है या किसी षड्यंत्रकारी द्वारा अंजाम दिया गया अमानवीय कृत्य । इसमें संत श्री आसारामजी बापू, उनके पुत्र नारायण स्वामी या किसी भी कार्यकर्ता (साधक) का हाथ बिल्कुल नहीं है । घटना का संबंध उनसे जोड़ना, सोचना या कहना भी पाप का भागी होना है ।

संत आसारामजी बापू देश को मजबूत बना रहे हैं किंतु देश को विखंडित करनेवाली ताकतें कोई-न-कोई षड्यंत्र कर देश में अशांति फैलाने का कार्य करती रहती हैं। उनसे समस्त देशभक्तों को सावधान और जागरूक रहना चाहिए ।

अतएव हमारा समस्त समाचार जगत से अनुरोध है कि कृपया शांत रहें, अपनी गरिमा बनाये रखें। आसारामजी बापू हमारे संत-समाज की एक महान विभूति हैं, वे भारत के लिए राष्ट्र-गौरव हैं, पथ-प्रदर्शक हैं, समाज और बच्चों के सर्वांगीण उत्थान के लिए कृतसंकल्पित हैं।

धन्यवाद।

– संत श्री युधिष्ठिर लालजी
प्रमुख, पूज्य शादाणी दरबार तीर्थ, रायपुर (छ.ग.) ।

***

बापूजी संतशिरोमणि थे, हैं और रहेंगे...

प्रातःस्मरणीय परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू के प्रति किये जा रहे दुष्प्रचार को देखकर हृदय द्रवित हो गया।

उन कुप्रचारकों को शर्म आनी चाहिए जो भारतीय संस्कृति के आधारभूत एवं रक्षक, संत-समाज के सिरमौर ब्रह्मनिष्ठ संतश्री के प्रति ऐसा कुप्रचार कर रहे हैं । यह हमारी संस्कृति पर कुठाराघात है ।

जो कोई निंदे साधु को, संकट आवे सोय ।
नरक जाय जनमे मरे, मुक्ति कबहु नहिं होय ।।

इस कुप्रचार से हमारे परम पूज्य संतश्री को तो कुछ नहीं होगा पर उन कुप्रचारकों की क्या गति होगी, भगवान ही जानें ! मीडिया में जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग बापूजी के प्रति हुआ वह देखकर दिल दहल गया । जिनका अपना कोई अस्तित्व नहीं, ऐसे-ऐसे लोग भी बापूजी के प्रति अनर्गल, भ्रामक प्रचार करने लगे । पर **'सोने को जंग कैसे लगे ?'**

विश्ववंदनीय बापूजी सदा से संतशिरोमणि थे, संतशिरोमणि हैं एवं संतशिरोमणि रहेंगे । इस कुप्रचार से साधकों के दिल को गहरी चोट लगी है। साधकों के दिल की आह एवं वेदना कुप्रचारकों को समूल नष्ट कर देगी इसमें कुछ भी संदेह नहीं है । लाखों हृदयों में बसे संत के प्रति अनर्गल, भ्रामक, मिथ्या एवं कलुषित भावना से किया गया यह कुप्रचार हमारी संस्कृति पर आघात है पर राक्षसी-तामसी प्रवृत्ति के लोग यह भूल गये हैं कि जीत हमेशा सच्चाई की ही होती है ।

सरकार को चाहिए कि इस प्रकार के निरंकुश निंदकों पर लगाम लगाये एवं भारतीय नागरिकों को चाहिए कि हमारे संत-समाज पर लगाये जा रहे मिथ्या आरोपों का विरोध करके भारतीय संस्कृति की रक्षा करें। मूक दर्शक बनकर तमाशा देखना भी एक प्रकार की कायरता है ।

हमें अपनी संस्कृति पर होनेवाले हर प्रहार का मुँहतोड़ जवाब देना चाहिए ताकि कोई ऐरा-गैरा हमारी संस्कृति एवं संतों के साथ खिलवाड़ करने की हिम्मत नहीं कर सके ।

पुनः एक बार फिर सद्गुरुदेव के श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम ! कोटि-कोटि वंदन !

– जी.एस. राजपुरोहित
सम्पादक 'ब्रह्म सरिता' (हिन्दी मासिक),
जैतपुर, जि. पाली (राज.) । □

अमृत वैद्य जैसे भूतों को पीपल मिल ही जाता है

शैतान, हैवान, इन्सान और भगवान को खोजने की आवश्यकता नहीं है, वे अपने में ही मौजूद हैं। आवश्यकता है मात्र परखने की।

कुछ मनुष्य शैतानियत और हैवानियत की असाध्य बीमारी से पीड़ित होते हैं। ऐसे दुष्ट प्रकृति के लोग भगवत्स्वरूप साधु-संतों की निंदा करके श्रद्धालुजनों के हृदय को ठेस पहुँचाने के कारण निरंतर अधःपतन की खाई में धकेले जाते हैं। वे खुद जो कर रहे हैं वही बढ़िया और वही श्रेष्ठ कार्य हैं ऐसी भ्रामक मान्यता के जाल में फँसकर उत्तरोत्तर नैतिक अधःपतन को आमंत्रित कर बैठते हैं।

ऐसे लोग जीवन में कभी सच्ची आध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकते। स्वयं भगवान चाहें तो भी उनको क्षमादान नहीं मिलता है। होंठ तक आया हुआ कौर मुख में आने से पहले ही नीचे गिर जाय यही हालत हुई है बड़ौदा के वैद्य अमृत प्रजापति की। वह शुद्ध कंचन जैसे निर्मल, परोपकारी संत श्री आसारामजी बापू के आश्रम में रहा, पर दुष्ट लक्षणोंवाला यह वैद्य निर्मल सरोवर के निकट रहने के बावजूद भी प्यासा और प्यासा ही रहा।

इसने आश्रम में कुछ वर्ष तक सेवा दी लेकिन लोभी व विषयी वृत्ति के इस वैद्य ने जब चिकित्सक के व्यवसाय को दाग लगे ऐसे कृत्य करना एवं उन्हें दोहराना जारी रखा तब उसे आश्रम से निकाल दिया गया। उसके बाद अमृत वैद्य अपने अशिष्ट और अभद्र आचरण को हमेशा के लिए तिलांजलि देकर अपने व्यवसाय में लग गया होता तो भी उसके पूर्व में किये कृत्य आज लोग भूल गये होते। लेकिन नहीं... **'भूत को पीपल मिल ही जाता है'** इस उक्ति के अनुसार समान रुचि और वृत्ति रखनेवाले लोग एक-दूसरे से सैकड़ों किलोमीटर दूर रहते हों तो भी एक दिन तो आपस में मुलाकात हो ही जाती है। इसी नियम के अनुसार अमृत वैद्य की भी आसुरी वृत्ति रखनेवाले उपद्रवी तत्त्वों के साथ मुलाकात हो गयी और उन सबने मिलकर आकाश के सामने थूक की बरसात कर दी। इसके परिणामस्वरूप पूज्य बापूजी के रोमकूपों का एक बाल भी बाँका नहीं हुआ लेकिन सभ्य समाज का वातावरण थोड़े समय के लिए कलुषित हो गया। पूज्य बापूजी ने अमृत वैद्य के जीवन-उत्थान के लिए उसका हाथ पकड़ा था तो वही हाथ काटने का व्यर्थ और बेहुदा प्रयास करके वैद्य अमृत प्रजापति ने अपने दुष्ट प्रारब्ध का संग्रह करने के अलावा और कौन-सी सिद्धि प्राप्त की ? संस्कृत में इस आशय की एक कहावत है कि ''संत की निंदा सम्पूर्ण कल्याण का नाश कर देती है।''

अमृत वैद्य आश्रम में सुविधा और सेवा के लिए आया था। संस्था ने उसके साथ कभी भी वेतन-संबंधी लिखित करार नहीं किया। अमृत वैद्य ने गरीबों की सेवा करने के बहाने आश्रम में प्रवेश तो किया लेकिन उसकी वृत्ति सेवाभावी इन्सान की नहीं थी। मरीजों से पैसे लूटने की प्रवृत्ति तक वह सीमित नहीं रहा बल्कि आश्रम में आनेवाली महिला मरीजों के साथ अभद्र और अश्लील व्यवहार करके चिकित्सक के व्यवसाय पर उसने धब्बा लगा दिया। उसे कई बार समझाया गया, कई बार सुधरने का मौका दिया गया और कई बार उसने माफी भी माँग ली लेकिन उसमें परिवर्तन नहीं आया, उसने दुष्ट वृत्ति नहीं छोड़ी इसलिए उसे आश्रम से निकाल दिया गया।

अमृत वैद्य अपनी लोभी व विषयी वृत्ति को वश में नहीं रख पाया। उसने गरीब मरीजों के पैसे लूटे, महिला मरीजों के साथ चिकित्सा के बहाने अश्लील हरकतें कीं... और अंत में नीचता

की सभी हदें पार करते हुए दुष्ट तत्त्वों के साथ मिलकर पूज्य बापूजी पर बेबुनियाद आक्षेपों की बरसात की और कृतघ्नता की पराकाष्ठा पर पहुँच गया । उसके किये दुष्कृत्यों के लिए आपके मुख से सहजता से निश्चित ही ये उद्‌गार निकल पड़ेंगे : ''इससे तो कुत्ते अच्छे कि जिनका अन्न खाते हैं उनसे विश्वासघात और गद्दारी नहीं करते ।''

हर गुर निंदक दादुर होई ।
जन्म सहस्र पाव तन सोई ॥

'शंकरजी और गुरु की निंदा करनेवाला मनुष्य अगले जन्म में मेंढक होता है और हजार जन्मों तक वही मेंढक का शरीर पाता है ।' **(रामायण)**

लेकिन ये तुलसीदासजी के वचन उस पर कोई असर करेंगे कि नहीं ?

संत का निंदकु महा हतिआरा ।
संत का निंदकु परमेसुरि मारा ।
संत के दोखी की पुजै न आसा ।
संत का दोखी उठि चलै निरासा ।

'संत का निंदक महाहत्यारा होता है और परमात्मा की ओर से तिरस्कृत होता है । संतों के निंदक की आशा कभी पूर्ण नहीं होती, जगत से वह निराश ही चला जाता है ।'

गुरु अर्जुनदेवजी के इन वचनों से वह सुधरेगा... ??? नहीं तो ऐसे धर्म और संस्कृति के द्रोहियों पर कुदरत का कोप यहाँ अथवा वहाँ होता ही है । धिक्कार है ऐसी कृतघ्नता को ! धिक्कार है ऐसी मलिन मुरादों को ! **– सुशांत सिंह** ❑

भक्त-हृदय की पुकार

ऐ नीच ! नराधम !! गुरु के निंदक !!!
कभी चैन अमन नहीं पाओगे ।
नीच योनियों में जा-जाकर,
अनंत जन्म दुःख पाओगे ॥
कितनों की है उफ् ले ली,
हिंसा निंदा से दिल जोड़ी ।
प्रभुप्रीति भक्ति से वंचित रहकर,
दुःख दर्द अशांति पाओगे ॥
काम न आये ममता माया,
यश वैभव यह कंचन काया ।
समता ज्ञान ध्यान भुलाकर,
जीते-जी ठोकर खाओगे ॥
खोले हैं सारे नरक द्वार,
तेरा होगा कभी नहीं उद्धार ।
अहं द्वेष का पोषण कर,
हाथ मलते ही रह जाओगे ॥
नश्वर क्षण पल की जिंदगी,
कर सेवा हरि की बंदगी ।
अनमोल श्वास व्यर्थ गँवाकर,
फिर अंत समय पछताओगे ॥
गुरु समदर्शी दाता बेफिकर,
बरसाते रहमत की नजर।
शाश्वत वैभव से खाली रहकर,
यह जीवन व्यर्थ गँवाओगे ॥

– जानकी चंदनानी, अमदावाद । ❑

'ऋषि प्रसाद' वार्षिक सम्मेलन

'ऋषि प्रसाद' के परोपकारी पुण्यात्माओं का 'अखिल भारतीय वार्षिक सम्मेलन' प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी उत्तरायण शिविर के पश्चात् अर्थात् १५ जनवरी २००९ को आयोजित किया जा रहा है । इसके साथ शिविर के दौरान उनके लिए प्रशिक्षण कार्यशाला का भी आयोजन किया जायेगा । जिसमें सेवा से संबंधित तकनीकी पहलुओं/आशंकाओं पर विचार-विमर्श एवं सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जायेगा । अतः सभी पुण्यात्माओं से नम्र निवेदन है कि इस सम्मेलन में शामिल होकर 'ऋषि प्रसाद' सेवा को गतिमान एवं सुचारु बनायें ।
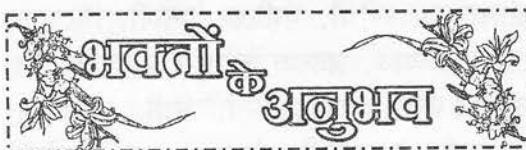
गुरुकृपा व सारस्वत्य मंत्र का चमत्कार

मैं पेशे से फीजियोथेरापिस्ट हूँ। स्कूल की प्रारंभिक पढ़ाई में मैं कुछ खास नहीं था। १०वीं की परीक्षा में मुझे गणित में सिर्फ ३५ अंक व साइंस में ५८ अंक मिले। जिससे स्कूलवालों ने आगे की पढ़ाई के लिए साइंस ग्रुप देने से मना कर दिया और कहा कि यह लड़का कभी डॉक्टर नहीं बन सकता। किसी तरह मैंने १२वीं पास कर बी.पी.टी. (बेचलर ऑफ फीजियोथेरापी) में एडमिशन ले लिया। मेडिकल की पढ़ाई बहुत कठिन महसूस हो रही थी, शब्द बड़ी ही मुश्किल से याद हो पाते थे।

इसी बीच मेरे सौभाग्य से दिसम्बर २००४ में मुझे परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू का सत्संग सुनने का अवसर मिला। मैंने बड़े ध्यानपूर्वक सत्संग सुना और बापूजी की दिल को छू लेनेवाली वाणी से प्रभावित होकर सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा ली। तत्पश्चात् मैं पूरे मनोयोग से मंत्रजप, ध्यान तथा भ्रामरी प्राणायाम आदि जो भी बापूजी ने बताया था करने लगा। थोड़े ही दिनों में इसका चमत्कारिक असर हुआ और मेरी बुद्धि का तेजी-से विकास होने लगा।

पढ़ाई के दौरान ही मैंने फीजियोथेरापी इलाज में अत्यंत उपयोगी दो ह्वील चेयरों का आविष्कार किया। अमेरिका से आये विश्वप्रसिद्ध डॉ. रूरी कूपर, जो 'फादर ऑफ ह्वील चेयर' के रूप में जाने जाते हैं, ने अपने कॉन्फरैंस में मेरी काफी तारीफ करते हुए मुझसे कहा था कि ''मैं भी ऐसा ही कुछ बनाने की सोच रहा था पर तुमने तो कमाल ही कर दिया।''

पूज्य गुरुदेव की कृपा व सारस्वत्य मंत्र के प्रभाव से अब तक मुझे अनेक पुरस्कार मिले हैं। उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है भारत सरकार द्वारा संचालित 'नेशनल रिसर्च डेवलपमेन्ट कॉरपोरेशन' द्वारा दिया गया नेशनल एवॉर्ड तथा एक लाख रु. नकद राशि। फीजियोथेरापी के इतिहास में पहली बार यह पुरस्कार किसीको मिला है। इस पुरस्कार के लिए भी मुझे सभीके द्वारा बहुत सराहना मिल रही है क्योंकि अन्य पुरस्कार विजेता पीएच.डी. किये हुए कई वर्षों के अनुभवी लोग थे, जबकि मुझे इतनी छोटी उम्र में ही इतना बड़ा पुरस्कार मिला है। मैं इन सारी सफलताओं का श्रेय मेरे सद्गुरुदेव परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू के चरणों में अर्पित करता हूँ। यह सब गुरुकृपा का ही चमत्कार है।

– डॉ. राहुल कत्याल
अर्जुन नगर, रोहतक (हरि.)। □

त्रिदोष-सिद्धांत

(गतांक से आगे)

प्रकृति अनुसार आहार

विपरीतगुणस्तेषां स्वस्थवृत्तेर्विधिर्हितः ।

'प्रकृति के विरुद्ध गुण का सेवन ही स्वास्थ्य-वर्धक होता है ।' **(चरक संहिता, सूत्रस्थानम् : ७.४१)**

वात प्रकृतिवाले वातवर्धक, पित्त प्रकृतिवाले पित्तवर्धक व कफ प्रकृतिवाले कफवर्धक आहार-विहार से तद्दोषजन्य रोगों से पीड़ित हो जाते हैं । अतः अपनी प्रकृति के विपरीत गुणवाले आहार-विहार का सेवन करना चाहिए ।

वायुवर्धक पदार्थ : जौ, ज्वार, मक्का, राजमा, मोठ, मसूर, चना, मटर, अरहर, सेम, सरसों, चौलाई, पालक, पत्तागोभी, लौकी, तुरई, टिंडा, ग्वारफली, अरवी, आलू, ककड़ी, तरबूज, जामुन, अमरूद, सिंघाड़ा, नाशपाती, गन्ना, शहद ।

वायुशामक पदार्थ : साठी के चावल, गेहूँ, बाजरा, उड़द, कुलथी, तिल, बथुआ, पुनर्नवा, परवल, पोई, कोमल मूली, पेठा, सहजन की फली, जीवंती (डोडी), भिंडी, गाजर, शलगम ।

अखरोट, काजू, बादाम, पिस्ता, चिलगोजा, चिरौंजी, मुनक्का, किशमिश, खजूर, अंजीर, फालसा, बेल, देशी (बीजू) आम, मीठा बेर व अनार, आँवला, बिजौरा नींबू, नारंगी, केला, शहतूत, अंगूर, नारियल, सेब, खरबूज, सीताफल, लीची, पपीता, इमली, कटहल, लहसुन, प्याज, अदरक, सोंठ, हींग, अजवायन, सौंफ, जीरा, काली मिर्च, मेथी, जायफल, इलायची, दालचीनी, केसर, गुलाब । तिल, सरसों व अरण्डी का तेल, गाय, भैंस व बकरी का दूध, ताजा-मीठा दही, छाछ, मक्खन ।

पित्तवर्धक पदार्थ : बाजरा, उड़द, कुलथी, तिल, सेम, सरसों, पकी मूली व ककड़ी, सहजन, सूरन (जमींकंद), गाजर, आलू, अरवी, अखरोट, काजू, बादाम, पिस्ता, चिलगोजा, चिरौंजी, बेल, खट्टे फल, अदरक, अजवायन, सौंफ, लहसुन, प्याज, काली मिर्च, मेथी, तिल एवं सरसों का तेल, छाछ ।

पित्तशामक पदार्थ : चावल, जौ, गेहूँ, ज्वार, मक्का, मूँग, राजमा, मोठ, मसूर, चना, मटर, अरहर, चौलाई, करेला, बथुआ, पुनर्नवा, परवल, पोई, पालक, पत्तागोभी, पका पेठा, लौकी, तुरई, कोमल ककड़ी व खीरा, टिंडा, कोमल बैंगन व मूली, डोडी, भिंडी, ग्वारफली, शलगम, मुनक्का, किशमिश, खजूर, अंजीर, फालसा, देशी आम, जामुन, अनार, शहतूत, अंगूर, मोसंबी, नारियल, सेब, सिंघाड़ा, खरबूज, अमरूद, सीताफल, कटहल, नींबू, हरा व सूखा धनिया, जीरा, लौंग, इलायची, दालचीनी, केसर, खस, गुलाब, शहद, गन्ना, दूध, घी, पुराना गुड़, मक्खन, मिश्री ।

कफवर्धक पदार्थ : उड़द, तिल, सरसों, पोई, लौकी, तुरई, ककड़ी, खीरा, भिंडी, अखरोट, काजू, बादाम, पिस्ता, चिलगोजा, चिरौंजी, मुनक्का, केला, सिंघाड़ा, सेब, अनन्नास, अमरूद, सीताफल, लीची, आलूबुखारा, कटहल, गन्ना, सफेद गाय व भैंस का दूध, ठीक-से न जमा हुआ दही, घी, मक्खन, मिश्री ।

कफशामक पदार्थ : साठी के चावल, जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का, मूँग, राजमा, कुलथी,

मोठ, मसूर, चना, मटर, अरहर, सेम, चौलाई, करेला, बथुआ, पुनर्नवा, परवल, पालक, मूली, फूलगोभी, पत्तागोभी, सहजन की फली व फूल, टिंडा, बैंगन, सूरन, गाजर, शलगम, डोडी, खजूर, बेल, जामुन, आँवला, हर्रे, मीठे अंगूर तथा अनार, तरबूज, पपीता, अदरक, सोंठ, सौंफ, अजवायन, हरा व सूखा धनिया, लहसुन, हींग, काली मिर्च, जीरा, मेथी, जायफल, लौंग, इलायची, दालचीनी, केसर, खस, गुलाब, तिल एवं सरसों का तेल, शहद, बकरी का दूध व दही, छाछ, गोमूत्र, एक वर्ष पुराना घी व पुराना गुड़।

अपनी प्रकृति के समान गुणवाले (दोषवर्धक) पदार्थों का सेवन आयु, देश, ऋतु, जठराग्नि आदि का विचार कर बहुत ही संयम व युक्तिपूर्वक करना चाहिए।

विशेष : १. वायुशामक पदार्थों में तिल का तेल, पित्तशामक में गाय का घी व कफशामक में शहद सर्वश्रेष्ठ है।

२. चार भाग जल में से १ भाग जल औटाकर शेष ३ भाग जल वायुनाशक, २ भाग औटाकर आधा शेष जल पित्तनाशक व ३ भाग औटाकर एक चौथाई शेष जल कफनाशक होता है।

३. मीठा, खट्टा व खारा रस वातशामक, कड़वा, कसैला व मीठा रस पित्तशामक तथा कड़वा, कसैला व तीखा रस कफशामक होता है।

४. वर्षा ऋतु वातवर्धक, शरद ऋतु पित्तवर्धक व वसंत ऋतु कफवर्धक है, अतः इन दिनों में विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

आदावन्ते च मध्ये च भोजनस्य तु शस्यते।
निरत्ययं दोषहरं फलेष्व आमलकं नृणाम् ॥

'भोजन के आदि, अंत व मध्य में सर्वदोष-नाशक, फलों में श्रेष्ठ आँवले का (या आँवला चूर्ण का) निरंतर सेवन मनुष्यों के लिए उत्तम है।' **(क्रमशः)** ❒

पूज्य बापूजी के पावन सान्निध्य में

'अखिल भारतीय बाल संस्कार सम्मेलन'

(दिनांक १० जनवरी २००९)

बाल संस्कार केन्द्रों के उत्तम संचालन एवं विस्तार हेतु 'उत्तरायण शिविर' के अवसर पर आयोजित इस सम्मेलन में भारत भर के सभी बाल संस्कार केन्द्र शिक्षक, शिविर शिक्षक तथा संपर्क सूत्रधारा के पदाधिकारी एवं शिविर आयोजन समिति पदाधिकारी सम्मिलित होंगे।

विशेषताएँ :

* देश भर में क्षेत्रीय एवं राज्य स्तर पर बाल संस्कार सम्मेलनों का आयोजन करने संबंधी चर्चा।

* विद्यार्थी उत्थान की सभी प्रवृत्तियों के विकास हेतु विचार-विमर्श।

'बाल संस्कार केन्द्र एवं शिविर प्रशिक्षण'

(दिनांक ११ से १४ जनवरी)

* विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर एवं बाल संस्कार केन्द्रों में दी जानेवाली संस्कार शिक्षा से संबंधित मार्गदर्शन।

* बाल संस्कार केन्द्र के शिक्षकों का 'शिविर शिक्षक' के रूप में चयन।

* पुराने केन्द्र शिक्षक और शिविर शिक्षकों की समस्याओं व सुझावों पर विचार-विमर्श।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :- बाल संस्कार विभाग, अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, अमदावाद।
दूरभाष : (079) 39877749, 66115749.

मोठ, मसूर, चना, मटर, अरहर, सेम, चौलाई, करेला, बथुआ, पुनर्नवा, परवल, पालक, मूली, फूलगोभी, पत्तागोभी, सहजन की फली व फूल, टिंडा, बैंगन, सूरन, गाजर, शलगम, डोडी, खजूर, बेल, जामुन, आँवला, हर्रे, मीठे अंगूर तथा अनार, तरबूज, पपीता, अदरक, सोंठ, सौंफ, अजवायन, हरा व सूखा धनिया, लहसुन, हींग, काली मिर्च, जीरा, मेथी, जायफल, लौंग, इलायची, दालचीनी, केसर, खस, गुलाब, तिल एवं सरसों का तेल, शहद, बकरी का दूध व दही, छाछ, गोमूत्र, एक वर्ष पुराना घी व पुराना गुड़।

अपनी प्रकृति के समान गुणवाले (दोषवर्धक) पदार्थों का सेवन आयु, देश, ऋतु, जठराग्नि आदि का विचार कर बहुत ही संयम व युक्तिपूर्वक करना चाहिए।

विशेष : १. वायुशामक पदार्थों में तिल का तेल, पित्तशामक में गाय का घी व कफशामक में शहद सर्वश्रेष्ठ है।

२. चार भाग जल में से १ भाग जल औटाकर शेष ३ भाग जल वायुनाशक, २ भाग औटाकर आधा शेष जल पित्तनाशक व ३ भाग औटाकर एक चौथाई शेष जल कफनाशक होता है।

३. मीठा, खट्टा व खारा रस वातशामक, कड़वा, कसैला व मीठा रस पित्तशामक तथा कड़वा, कसैला व तीखा रस कफशामक होता है।

४. वर्षा ऋतु वातवर्धक, शरद ऋतु पित्तवर्धक व वसंत ऋतु कफवर्धक है, अतः इन दिनों में विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

आदावन्ते च मध्ये च भोजनस्य तु शस्यते।
निरत्ययं दोषहरं फलेष्व आमलकं नृणाम् ॥

'भोजन के आदि, अंत व मध्य में सर्वदोष-नाशक, फलों में श्रेष्ठ आँवले का (या आँवला चूर्ण का) निरंतर सेवन मनुष्यों के लिए उत्तम है।' **(क्रमशः)** ❑

पूज्य बापूजी के पावन सान्निध्य में 'अखिल भारतीय बाल संस्कार सम्मेलन'

(दिनांक १० जनवरी २००९)

बाल संस्कार केन्द्रों के उत्तम संचालन एवं विस्तार हेतु 'उत्तरायण शिविर' के अवसर पर आयोजित इस सम्मेलन में भारत भर के सभी बाल संस्कार केन्द्र शिक्षक, शिविर शिक्षक तथा संपर्क सूत्रधारा के पदाधिकारी एवं शिविर आयोजन समिति पदाधिकारी सम्मिलित होंगे।

विशेषताएँ :

* देश भर में क्षेत्रीय एवं राज्य स्तर पर बाल संस्कार सम्मेलनों का आयोजन करने संबंधी चर्चा।

* विद्यार्थी उत्थान की सभी प्रवृत्तियों के विकास हेतु विचार-विमर्श।

'बाल संस्कार केन्द्र एवं शिविर प्रशिक्षण'

(दिनांक ११ से १४ जनवरी)

* विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर एवं बाल संस्कार केन्द्रों में दी जानेवाली संस्कार शिक्षा से संबंधित मार्गदर्शन।

* बाल संस्कार केन्द्र के शिक्षकों का 'शिविर शिक्षक' के रूप में चयन।

* पुराने केन्द्र शिक्षक और शिविर शिक्षकों की समस्याओं व सुझावों पर विचार-विमर्श।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :- बाल संस्कार विभाग, अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, अमदावाद।
दूरभाष : (079) 39877749, 66115749.

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

आत्मसाक्षात्कार दिवस, चंडीगढ़ आश्रम, १ अक्टूबर : जन्मदिवस कइयों का कई बार मनाया जाता है किंतु आत्मसाक्षात्कार दिवस किन्हीं-किन्हीं ऐसे ब्रह्मनिष्ठ महापुरुषों का मनाया जाता है जिनकी जीवत्व की भ्रांति पूर्णतः दग्ध हो चुकी होती है। ऐसे हमारे पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार दिवस का लाभ मिला चंडीगढ़ के गुरुमुख दुलारों को। जैसे ही पूज्यश्री का चंडीगढ़ आश्रम में आगमन हुआ, पंजाब एवं आस-पास के राज्यों के भक्तों की भीड़ से आश्रम-परिसर भर गया। पूज्य बापूजी ने सत्संगियों को जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि- आत्मसाक्षात्कार की महत्ता एवं उसे प्राप्त करने की सचोट युक्तियाँ बतायीं। पूज्य बापूजी के सान्निध्य व सत्संग-अमृत का लाभ पाकर सभी आह्लादित थे।

बरेली (उ.प्र.), ५ (शाम) व ६ अक्टूबर : बरेली आश्रम में प्रथम बार पूज्यश्री के पदार्पण पर आश्रम को बंदनवारों, फूलमालाओं व मंगल चिह्नों से सुंदर ढंग से सजाया गया था। आश्रम की भूमि को पूज्यश्री के चरणकमलों का स्पर्श होते ही वातावरण आत्मचैतन्य की दिव्य चेतना से ओतप्रोत हो गया एवं संतश्री के जयकारों से आश्रम गूँज उठा। बड़ी संख्या में उपस्थित भक्तों ने पूज्यश्री के सत्संग-सान्निध्य का लाभ लिया।

५ वर्ष पश्चात् पूज्यश्री के बरेली आगमन पर भक्तों का अपार जनसमूह उमड़ पड़ा।

बदायूँ (उ.प्र.), ७ अक्टूबर : बदायूँवासियों की प्रार्थना स्वीकार कर करुणानिधान बापूजी ने सत्संग का एक सत्र बदायूँ में दिया। सत्संग के प्रचार के लिए भक्तों के पास अत्यल्प समय बचा था लेकिन देखते-ही-देखते पूरे क्षेत्र में बापूजी के आगमन का समाचार वायु-वेग से फैल गया और इतनी अधिक भीड़ उमड़ी की व्यवस्थाएँ कम पड़ने लगीं। अनेक प्रभु के दीवानों व गुरु के प्यारों ने खड़े-खड़े ही पूज्यश्री के दर्शन कर उनके वचनामृत का पान किया।

उझानी (उ.प्र.), ७ अक्टूबर : दोपहर ११ से १ बजे तक पूज्यश्री के करकमलों द्वारा उझानी में नवनिर्मित कुटिया का उद्घाटन एवं सत्संग कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

चन्दौसी (उ.प्र.), ७ अक्टूबर : अपने परिश्रम की परवाह किये बगैर पूज्यश्री ने चन्दौसी में शाम का सत्र देकर नगरवासियों को कृतार्थ किया। चन्दौसी के आश्रम में पूज्यश्री का पदार्पण पहली बार हुआ।

पूज्य बापूजी ने कहा : ''भगवान का स्वभाव करुणाप्रधान है। वे किसीकी कमी नहीं देखते, सबको अपना लेते हैं और कल्याण करते हैं। ऐसे भगवान से जुड़ गये तो सदा प्रसन्न रहोगे।''

जैसे ही बापूजी ने वाणी को विराम दिया व मुरादाबाद चलने का संकेत किया, तत्काल साधक शिष्यों की आवाज आयी : 'थोड़ा और बोलिये बापू !' लेकिन समय के अभाव के कारण बापूजी को हरिनाम संकीर्तन शुरू करके न चाहते हुए भी विदा लेनी पड़ी। मात्र ४५ मिनट के इस प्रवचन ने लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। १० वर्ष पूर्व बने यहाँ के आश्रम में बापूजी के पदार्पण के लिए स्थानीय भक्तों ने भक्तिमती शबरी जैसी प्रतीक्षा का परिचय दिया एवं अपनी तपस्या का सुफल पाया।

मुरादाबाद (उ.प्र.), ८ व ९ अक्टूबर : कई वर्षों बाद मुरादाबाद की मुराद पूर्ण हुई और ७ अक्टूबर की शाम को पूज्य बापूजी का

मुरादाबाद आश्रम में शुभागमन हुआ व सभी भक्तों को पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग का लाभ मिला ।

८ अक्टूबर को यहाँ के कंपनी बाग परिसर में पूज्य बापूजी का सत्संग सुनने के लिए विशाल भीड़ एकत्र हो गयी । सत्संग का आरंभ बापूजी ने एक प्रश्न से किया, पूछा : ''संसार की सबसे मजबूत चीज कौन-सी है ?'' कई उदाहरण देने के बाद अंतिम उत्तर बताते हुए कहा : ''सबसे मजबूत चीज है संकल्प और समस्त संकल्पशक्ति नित्य चैतन्य आत्मा में से ही उत्पन्न होती है । निज आत्मा में केन्द्रित होने के साथ तीन योग्यताएँ विकसित कर लें तो अद्‌भुत सामर्थ्य, सुख तथा अनेक रहस्य खोजने में सफल हो जायेंगे । ये योग्यताएँ हैं प्रभु के बारे में ज्ञान, प्रीति तथा मन की विश्रांति ।''

जीवन को सुख-दुःख का संगम बताते हुए बापूजी ने नकारात्मक विचारों से दूर रहने पर जोर दिया, कहा कि 'नकारात्मक चिंतन बुढ़ापा लाता है ।'

उत्तर प्रदेश के विभिन्न समाचार पत्रों जैसे - अमर उजाला, दैनिक जागरण, राष्ट्रीय सहारा, आज, जेड एक्सप्रेस, वॉयस ऑफ लखनऊ, शाह टाइम्स आदि अखबारों ने भी बड़ी प्रमुखता से, प्रधानता देकर बापूजी के ओजस्वी सत्संग की खबरें फोटोसहित प्रकाशित कीं एवं जनता के स्नेह के पात्र बने ।

शरद पूर्णिमा महोत्सव, फरीदाबाद (हरि.), १२ से १४ अक्टूबर (सुबह तक) : शरद पूर्णिमा के निमित्त आयोजित ढाई दिवसीय सत्संग-समारोह के पहले ही दिन यहाँ के दशहरा मैदान पर लगा विशाल पंडाल भक्तों के सैलाब के आगे छोटा पड़ गया । पूज्यश्री ने शरद पूर्णिमा की महिमा बताते हुए कहा कि ''शरद पूर्णिमा की रात को चंद्रमा की किरणों से अमृत-तत्त्व बरसता है । इसलिए खीर बनाकर उसे चंद्रमा की किरणों में रखकर फिर खायें । इस दिन एक विशेष औषधि बूटी खीर में मिलाकर खाने से दमे के रोग से मुक्ति मिलती है ।'' दमे की यह बूटी सत्संग-स्थल पर व अन्य आश्रमों में दमापीड़ितों को निःशुल्क दी गयी तथा उसका विधिवत् सेवन कराने की व्यवस्था भी की गयी थी ।

शरद पूर्णिमा महोत्सव, अमदावाद (गुज.), १४ अक्टूबर (शाम) : फरीदाबाद में सत्संग की पूर्णाहुति कर पूज्य बापूजी अमदावाद आश्रम पहुँचे, जहाँ उनके दर्शन के लिए गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि विभिन्न राज्यों के पूर्णिमा व्रतधारी आतुर थे । पूज्य बापूजी ने शाम को भक्तों को सत्संग-दर्शन का लाभ प्रदान किया ।

रात्रि में पूज्यश्री का पुनः आगमन हुआ और वह अवसर आया जिसका सभीको बेसब्री से इंतजार था । साबरमती नदी का विशाल तट... मन के देवता चंद्रमा अपनी धवल, शीतल, अमृतसदृश चाँदनी बरसा रहे हैं... दिल के देवता पूज्य बापूजी अपनी नूरानी निगाहों का अमृत बरसा रहे हैं... बाहर प्राकृतिक अमृत की वर्षा हो रही है तो भीतर ज्ञान-ध्यानामृत की वर्षा हो रही है... कौन भूल सकता है ऐसे क्षणों को ? भक्तों के जीवन में ऐसे क्षण कुछ विलक्षण लक्षणों से सम्पन्न होते हैं और उनके लिए यादगार सुनहरे पल बन जाते हैं ।

गुरुदेव के नजदीक से दर्शन करने की अनेक भक्तों की तमन्ना को भाँपकर भक्तवत्सल बापूजी भक्तों के बीच उपस्थित हुए एवं भक्तवांछा-कल्पतरु की उपाधि को सार्थक किया ।

एक ओर भगवान के प्यारे, गुरु के दुलारे ये भक्तजन आंतरिक तृप्ति का अनुभव कर रहे थे तो दूसरी ओर आश्रम के सेवक उनकी उदरतृप्ति के लिए दूध-खीर बनाकर उसे चंद्रमा की किरणों से पुष्ट करके भक्तों के आने का इंतजार कर रहे

थे। एक ओर भक्ति, ध्यान और ज्ञानयोग सीखने को मिला तो दूसरी ओर निष्काम कर्मयोग !

१९ अक्टूबर की शाम को काँची कामकोटि पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी महाराज का अमदावाद आश्रम में पूज्य बापूजी की उपस्थिति में आगमन हुआ । अत्यंत व्यस्त कार्यक्रम के बीच भी पूज्य बापूजी के प्रति उनका अपार स्नेह उनको खींच ही लाया। हजारों साधक संत-मिलन के इन क्षणों के साक्षी बने।

पूज्य बापूजी स्नेह की मूर्ति हैं। पूज्यश्री के प्रति भारत भर के सभी संत कितना प्रेमभाव, आदरभाव रखते हैं यह शंकराचार्यजी के आगमन से सिद्ध हुआ। उनका अपनत्व भरा स्वागत करते हुए पूज्यश्री बोले : ''यह संस्था आपकी है और आपकी संस्था में आपका स्वागत है।''

पूज्य बापूजी की अनुपस्थिति में भी पहले एक बार शंकराचार्यजी का आश्रम में आगमन हुआ था एवं यहाँ के वातावरण से वे आह्लादित हुए थे। उसीको स्मरण करते हुए पूज्यश्री ने आगे कहा कि ''अगर आपको यह आश्रम अपना नहीं लगता तो आप मेरी अनुपस्थिति में भी यहाँ आने का सौहार्द क्यों दिखाते ?''

सत्संग-पंडाल में बैठे अपार जनसमूह को संबोधित करते हुए शंकराचार्यजी बोले : ''बापूजी ब्रह्मस्वरूप संत हैं । उनके दर्शनमात्र से जीवन में उन्नति हो जाती है। बापूजी के देश-विदेश में प्रवचन के द्वारा करोड़ों लोगों के जीवन में परिवर्तन आ रहा है और वे लोग उत्थान की राह पर चल रहे हैं।'' ❑

ऐसे मनायी पूज्य बापूजी ने दिवाली...

वैष्णव जन तो तेने रे कहिये,
जे पीड़ परायी जाणे रे...

दीन-दुःखियों, गरीबों एवं आदिवासियों के कष्टों को देखकर कृपासिंधु पूज्य बापूजी का हृदय करुणा से पसीज उठता है और वे दीपावली एवं अन्य अवसरों पर उन क्षेत्रों में भंडारों का आयोजन करते हैं। कई भंडारों में वे स्वयं उपस्थित रहते हैं। वैसे आश्रम द्वारा दीपावली पर्व पर देश भर में अनेक स्थानों पर भंडारों का आयोजन हुआ, परंतु रेवदर जि. सिरोही, गोगुंदा जि. उदयपुर, कोटड़ा जि. उदयपुर (राज.) के भंडारों में बापूजी स्वयं उपस्थित रहे। यहाँ के हजारों गरीब बच्चे-बच्चियों को, माई-भाइयों को दीपावली के निमित्त नये वस्त्र तथा बर्तन, मिठाई और नकद रुपये आदि दिये जाने पर हजारों मुरझाये चेहरे स्नेह भरी सौगातों से हर वर्ष की तरह खिल उठे। बापूजी आये तो दिवाली... दिवाली आये तो बापूजी ! यहाँ के गरीब, अनपढ़, लाचार लोग बापूजी की सहज उपस्थिति, स्नेहपूर्ण सात्वना एवं सूझबूझ भरी स्वस्थ, सुखी रहने की सीखें पाकर 'आपणा बापजी, प्यारे-प्यारे बापजी' ऐसा कहते हुए धन्य-धन्य हुए। गरीब-गुरबों की सेवा करके साधकों के दिल को भी संतुष्टि मिल रही थी। साधकों ने भोजन-प्रसाद परोसकर सभी लोगों को उदरतृप्ति प्रदान की।

एक ओर जहाँ सभी लोग अपने-अपने परिवार और मित्रों के साथ दीपावली मनाने में मस्त थे, वहीं करुणामूर्ति पूज्य बापूजी गरीब आदिवासियों के बीच 'नर-सेवा ही नारायण-सेवा' के उदात्त सिद्धांत को चरितार्थ कर रहे थे। कैसे अनोखे संत हैं बापूजी ! धन्य हैं ऐसे महापुरुष ! ❑

उरण, जि. ठाणे (महा.) के गरीबों में अन्न-वितरण तथा
अनाज आदि जीवनोपयोगी सामग्री प्राप्त कर संतोष जताती हुई बिहार की बाढ़पीड़ित जनता।

होनावर (कर्नाटक) में संस्कार-सिंचन व बालभोज कार्यक्रम
तथा भुज-कच्छ (गुज.) में बालभोज का आयोजन।

पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार दिवस पर बालाघाट (म.प्र.) में वस्त्र एवं
फल वितरण तथा छिन्दवाड़ा (म.प्र.) में वस्त्र-वितरण।

सुलतानपुर (उ.प्र.) के 'ऋषि प्रसाद सेवादार सम्मेलन' में नूतन संकल्प लेते हुए परोपकारी पुण्यात्मा तथा
आश्रम के विरुद्ध किये गये कुप्रचार के निषेध में देवास (म.प्र.) में आयोजित धर्मसभा में उपस्थित श्रद्धालुजन।

पूज्य बापूजी के प्रति अपना सौहार्द प्रकट करते हुए काँची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी अमदावाद आश्रम पधारे एवं हजारों भक्तजन संत-मिलन की इस वेला के साक्षी बने।
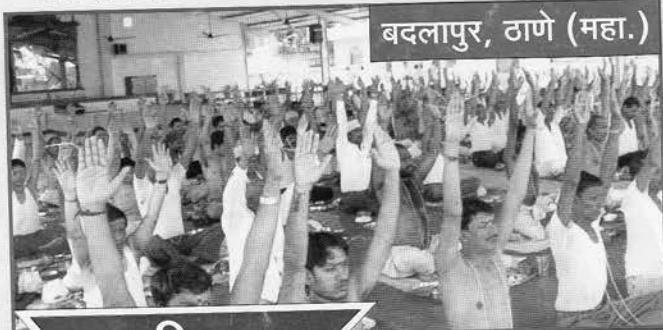
पूज्य बापूजी के आभामंडल (ओरा) की तस्वीर (विस्तृत लेख पढ़िये पृष्ठ २ पर)

सामूहिक श्राद्ध

वाराणसी (उ.प्र.)

लुणावाडा (गुज.)

* क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन।
* हर क्षेत्र के प्रथम तीन विजेता राष्ट्रीय स्तर हेतु चुने जायेंगे।
* राष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक अंक लानेवाले प्रथम १३ विद्यार्थियों को पूज्य बापूजी के करकमलों द्वारा स्वर्ण पदक, रजत पदक आदि अनेक विशेष पुरस्कार।
* कुल ४१० विद्यार्थियों को ८६०० 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' ग्रंथ पुरस्कार रूप में प्राप्त होंगे।
* क्षेत्रीय स्तर पर प्रतियोगिता-आयोजन की अंतिम अवधि ५ जनवरी २००९ तक। सभी क्षेत्रीय आश्रम, समितियाँ व साधक परिवार मिलकर इस प्रतियोगिता का आयोजन करें और विद्यार्थियों को शीघ्र उन्नत बनाने के दैवी कार्य में सहभागी बनें।

संपर्क : 'बाल संस्कार विभाग', अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, अमदावाद-५. फोन : (०७९) ३९८७७७४९, ६६११५७४९.

नोट : विस्तृत जानकारी www.ashram.org वेब-साइट पर देखें।